NOT TO BE TAKEN OUT
GOVERNMENT OF INDIA
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA.

Class No. H 891.4318

Book No. K 699

N. L. 38.

MGIPC—S8—21 LNL/59—25-5-60—50,000.

॥ हंसजवाहिर भाषा ॥

कासिमशाह दरियाबादी कृत

जिसमें

बलखबुखारा के बादशाह के यहां हंसका और
चीन के साहंशाह के यहां जवाहिर का जन्म
होना और दोनों का सम्बन्ध होकर विवाहादि
उत्सव का होना आदि अतिही उत्तमता
से कथन किया गया है

उसीको

सर्व गुणग्राहियों के हितार्थ

प्रथमवार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी. आई. ई) के छापेखाने में छापीगई
सन् १९०५ ई० ॥

SHELF LISTED

शब्द का हंस से रुखसत होकर जवाहिर के पास जाना और तमाम अहवाल बयान करना बादशाह का वज़ीर के वास्ते पेशवाई के भेजना और कहना ॥



हंस का ख्वाब में अपनी मां को देख परेशान होना और जवाहिर का रंज करना और बादशाह का हंस को समझाना



NATIONAL LIBRARY
NO. 10083
DATE 30.6.60

हंस का सुबह को उठना और जवाहिर का न पाना और सब का घ-
बराना और हंस का समंदर में डूबने का क़स्द करना और शब्द का समझाना





हंस का नूरमाह के साथ जवाहिर की सलाह से शादी करना और नूरमाह से बाद यक़सर के शायाब वस्ल से मसरूर होना ॥ ॥



हंस का महल्ल में जाना और नूरमाह का हाथ पकड़ के उठाना और उस का साथ चलने पर मुस्तैद होना और उस की मां का हंस से बेटी को मांगना और हंस का न मानना फिर सवार हो वतन जाना ॥



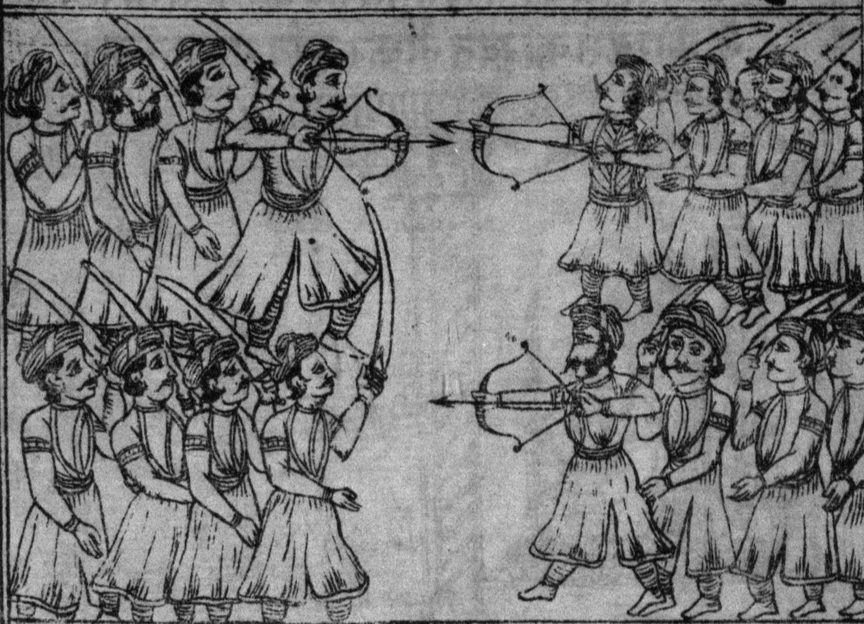
ग्यातिरखां क़ासिद का दोल्लामीर के पास जाना और हंस का ख़त देना और ज़बानी गुफ़्तगू करना और दोल्लामीर को सामान जंग करना



हंस का घाट पर पहुंच कर फ़ौज को हुक्म पार उत्तरने का देना और दोल्लामीर का अपनी फ़ौज को हुक्म देना कि हरगिज़ पार न उतरें॥



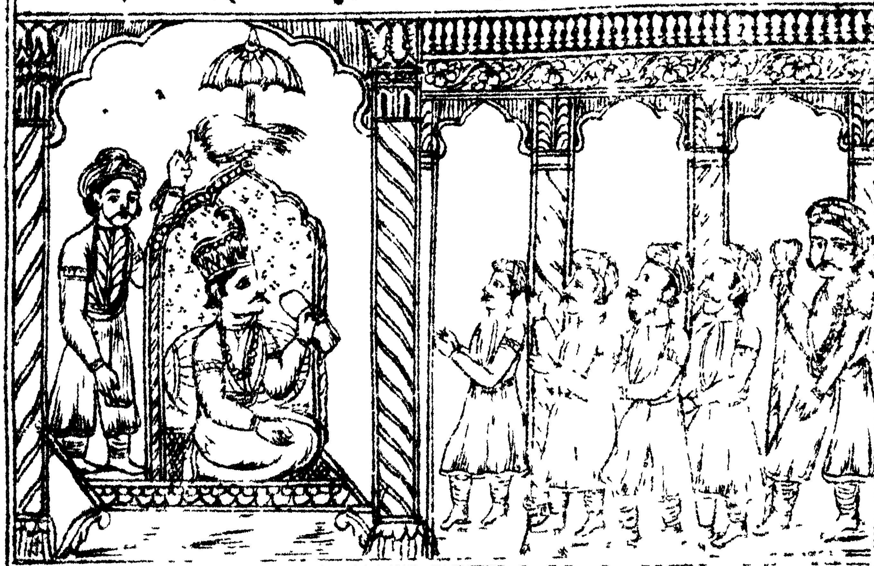
जंग होना लशकर हंस और दोलामीर से और भाग नाल
शकर दोलामीर का और अकेला रहना दोलामीर बहादुर का



दोलामीर का क़तल होना और हंस का बाद फ़ते-
याबी के अपने शहर में चले जाना ॥



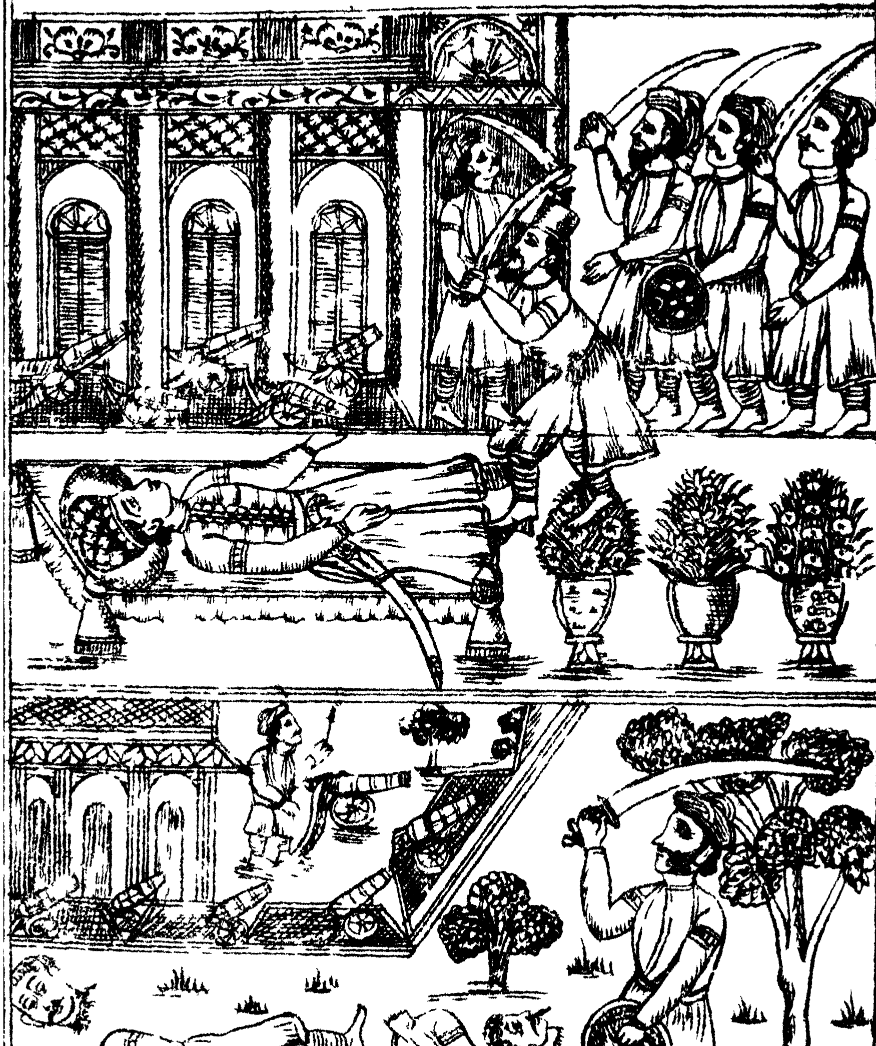
हंस का जलूस करना और अमरा का नज़र गुज़ारना और अनवरमीर बलख़ी का रुख़सत तलब करना वास्ते रूम जाने के और हंस का ख़त लेकर रुख़सत करना ॥



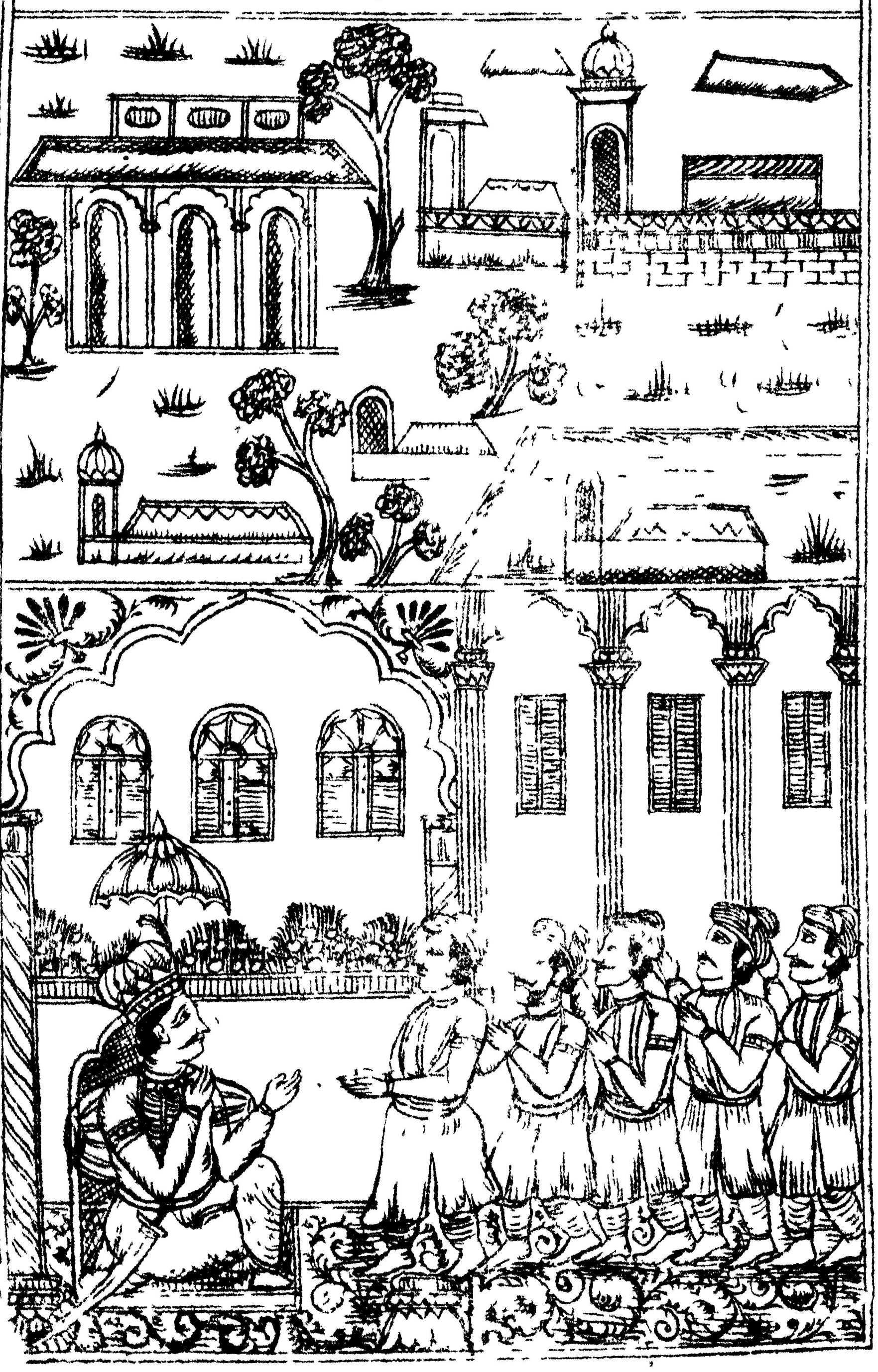
क़मरख़ां परस्तारज़ादः दोलामीर का जंग बलख़ में भाग जाना और बाद नलस्सुन के बलिबास सौदागर चीन हंस के पास आना और दोलामीर के ख़ून का माविज़ा लेना याने हंस का क़तल करना ॥



क़मर ख़ाँ का हंस को क़त्ल करके बाहर आना और
हंस दोस्तों का उस से लड़कर मारा जाना ॥



हंसका मय साथियों के दफ़्न होना और बेटेका तख़्त पर बैठना ॥





अथ हंसजवाहिर प्रारम्भः॥

चौपाई॥

प्रथमहिं अलख नाम चितलाऊं। जेहिचितलायज्योतिलखपाऊं॥
जो इस रतन रचा उजियारा। तेहिकर प्रीति रचा संसारा॥
सिरजै सात स्वर्ग कैलासा। सिरजै ऐसी निर्मल वासा॥
सिरजै दूत बरन बहु भांती। सिरजै भोर सांझ दिनराती॥
सिरजै मेघ नीर लय आवैं। सिरजै नखत जो बरनबनावैं॥
सिरजा गगन अनूप सोहाई। सिरजा सहित सूर खगराई॥
सिरजा बीज कुमुद सरमाहीं। सिरजा गगन पवनमध्य चाहीं॥

दो० सिरजा गगन पवन जिन औ विशेष जयटेक।
तीनलोक जिन सिरज्यौ अलख नाम वह एक॥

सिरजा पवन महानिरमला। निरख न जाय रहै तनमला॥
सिरजै सात समुन्द मलथाती। सिरजै मगरमच्छ बहुभांती॥
सिरजा उदधिके पार न पावैं। सिरजा बूड़त तेहि चढ़भावैं॥
स्वाती बूंद सीप मुख दीन्हा। निरमल मोती उतपतिकीन्हा॥
तीनिलोक युग चार बनावा। पूररहा पय दृष्टि न आवा॥
प्रकट गुप्त सो आप समाना। दृष्टि पड़े कोउ लखे न जाना॥

स्वर्ग पताल जगत संसारा । वहकी कीर्त्ति कहत सब हारा ॥
असकरता बहु जक्तकर उक्त कथा जिन्हकेर ।
जलपर भूमि बिछायके धरा सुगिरिधर मेर ॥
धरती मेरु दोउ बड़ साजा । ताके बीच सकल उपराजा ॥
सिरजा विष अमृत भुइ माहीं । सिरजा दूध जो दुहिकर खाहीं ॥
सिरजी ऊख अनेक मिठाई । सिरजा पान औ फूल खटाई ॥
वन खन्दक औ मारग भारी । कहूं उजाड़ कहूं फुलवारी ॥
पच्छ पतंग बहुत विधि कीना । भोगविलास सबन कहँदीना ॥
शावक सिंह हंस औ चांटी । सबका भोग रात दिन-बांटी ॥
यक मारै और एक जियावै । वहिकर मर्म्म जान को पावै ॥
जो चाहै सो विधिकरै अहै सो आप अकेल ।
गंगा मर बहु तर रहैं अहै सो अचरज खेल ॥
माखी कीन जो पी बुध लावै । अचरज लोग चरच नहिंपावै ॥
सिरजा मृग कस्तूरी वासा । लखे न तनमन रहै उदासा ॥
सिरजा गिरि झरना झरलाई । सुल्ला बहै रात दिन जाई ॥
धन भण्डार घटै जो नाहीं । धन वह ठौर भरा उमड़ाहीं ॥
धन करता जिन जगत बनावा । जिनकागुनमुखवरणि न आवा ॥
पण्डित पढ़ पढ़ जगके हारे । थके ज्ञान कोउ पाय न पारे ॥
चौदह भुवन बीति जग जारी । करत न एक भई कहसारी ॥
परखि न जाई जासु गुन तीनलोक जिन कीन ।
अहै पूरन जक्त मुख पड़े न कतहूं चीन ॥
तीनलोक औ जगत जो साजा । सहस अठारा वरण समाजा ॥
आदम आदि जो पुरुष सँवारा । सब सुख दीन कहैं सरदारा ॥
कोउ सुलतान कहै कोउ राजा । कोउकिसानकोउनिरमलसाजा ॥

काहू भोग और सेवक साथा। काहू रोग पाव बन हाथा॥
काहु कीन जो बल फूलाऊ। कोइ पांगर चलसके न पाऊ॥
केहू दीन बहु द्रव्य भँडारा। काहू कीन दुःख अधिकारा॥
कोई योग जगत पति लावा। कोई भर्म सो जन्म गवांवा॥

काहूदीनी द्रव्य अति गर्व करैं भरि देह।
अन्त भये दुखियासे आन मिले जब केह॥

भूनक देवपरी बुधि साजा। आदम कीन सकल मनराजा॥
जो करतार मिया अति कीना। सभी भोग आदम कहँ दीना॥
दीनी राज श्री और नारी। दीनी सब लक्ष्मी उजियारी॥
दीन्हिस रूप अनूप सोहावा। दीन्हिस बरन बरन पहिरावा॥
जो जो भोग जगत महँ साजा। सो सब कीन्हा सुखके काजा॥
चांद सुरज सब देव बराती। मास काज कीन्हा बहुभांती॥
दीन्हिस हस्त घोड़ सुख सारा। दीन्हिस नगर कोटि भंडारा॥

पलमहँ तीरथ कीन सब भोग भुगत सब दीन।
अस दाता करतार की न कस भलो लौलीन॥

ऐसे अलख जो अहै अकेला। परघट गुप्त सभी रंगखेला॥
नहीं अस ठांव जहां वो नाहीं। पूर रहा चौदा गड़ माहीं॥
ऐसे जानि संगरब न आनो। कहो जो ताहिपुरुष पहिचानो॥
हथिया आवा भवन वह पूजा। वही रहै कोउ और न दूजा॥
वह करतार जो जगत विधाता। सब मंगता वह सबकर दाता॥
ना वह मात पिता नहिं भाई। ना वाके कोइ कुटुँब सगाई॥
ना वह होय कि होकर बारा। वह किन रचा रचा वह सारा॥

वह साजै भंजै वही वही सोहै उजियार।
प्रतिपालै वहि जन्मदै वही मिलावैछार॥

अस उजियार जगत उपराहीं। चांद सुरज सब वह परछांहीं ॥
अहमद संग जो चारौं यारा। चारिउ सिद्ध मीत करतारा ॥
अबूब कर सद्दीक जो सांचे। पहिले प्रेम पंथ वह राचे ॥
उम्र खिताब दीन कर खांभा। कीन्हाअदल जगततेहिथांभा ॥
इसमा पंडित अस उजियारा। लिख पुराण दीन संसारा ॥
चौथे अली सूर जग भाना। कफ़र भंज सब लोक बखाना ॥
दीनके दीपक चारिउ यारा। दिनदिनहोयजगतउजियारा ॥
अन्त समय आवे प्रलय कोऊ न बांधै धीर।
अहमद चारिउ यार सँग कई लगावें तीर ॥
कासिम का भूले जगमाहीं। यहजग नेस्त हस्त कुछनाहीं ॥
वह चितलाय जो मानुषकीना। बीन बीन सरो सुख दीना ॥
दीन्हिस देह सुघर भराऊ। सेवक दीन्हिसहाथ और पाऊ ॥
दीन्हिस दशन जेहि रस भोगौ। दीन्हिस बहुतज्ञान संयोगौ ॥
मानुष कीन दीन बहु ज्ञाना। दीन्हिस गुरु और वेद पुराना ॥
वस्तु अमोल सभी तोहिदीना। तोहि बाउर चेतनहिं कीना ॥
काल फिरै लीने कर फांसी। अबहूं चेत जाग विश्वासी ॥
अन्त अचानक आहिये फिरै कालको फन्द।
अबहुं चेतसों ज्ञानकरि छांड़ि जगतको दन्द ॥
अय करता तुम सब कुछ दीना। मैं बाउर कुछ चेत न कीना ॥
है निरगुण तो पंथ अपारा। तुम दयालु मोहिं तारनहारा ॥
तुम दाता कछु आश न तोहीं। अबकी बार उबारो मोहीं ॥
फांसी प्रेम प्रीति की डारो। भव सागर से पार उतारो ॥
बेड़ी कठिन लागि सँग मोरे। मोहिं निवार पारकर तोरे ॥
आवो वन्त आज जग चारी। तुम ठाकुर मैं तोर भिखारी ॥

आन पड्यों भवसागर माहीं। तोहिबिन टेकको काढ़ेमोहीं॥
हौं भिखारि दाता तोहीं से जगत कर नाथ।
भिक्षा और न मांगहूं करो चरण मम माथ॥
तुम करतार जगतके राजा। तुम अनूप आदम उपराजा॥
तुम जल ऊपर देश बनावा। तुमहीं ऊपर शब्द उठावा॥
नोह बनी जो बोहित पथरा। तुम सेवक परलो तब फेरा॥
जो खलील पुनि शरन तुम्हारी। जरत आग कीनी फुलवारी॥
यूनुस पड़े मीन मुख माहां। तेरे भजन भयो सुख ताहां॥
मूसा पंथ नेर सुख दीना। पार भयो सो तुम कहँ पहिना॥
यूसुफ़ पड़े कोप अँधियारे। तुमहीं मिसर पाट बैठारे॥
हौं सोपहिया भव सागरी कठिन साह ऊगाह।
तीन असविपति पनार मोहिंमतिसो एक निबाह॥
सुमिरौ नाम करीम सो पीरा। जेहिकी नाव चढ़े वहिबेरा॥
हौं केहि योग जो करौं बखाना। वह न कलंक जगतकर भाना॥
सहसो बरन अलख मो कीना। प्रकट आह नह काहू छीना॥
अलख भजन मुंह पहुंचा सोई। तिरना रहे जान नहिं कोई॥
तेही ज्योति में दीपक बारा। पीर महम्मद जग उजियारा॥
नाव महम्मद जग उजियारा। भागर बैठि जगत उजियारा॥
पुनि वह ज्योति दिये उतारा। जो कुछ लाग चला संसारा॥
धर्मवन्त निरमल गुरू अलख दुलारे पीर।
तिनघर दीपक बुध रचा अशरफ़ जोतशरीर॥
अशरफ़ पीर जगत उजियारा। तेहि कारन भावैं संसारा॥
भयो जो पीर जगत की दाया। तेहि पग परसे उबरे हिया॥
दरशन जान दीप परकासा। भयो पतंग जगत चहुंपासा॥

धर्म्म दयालु दया तेहि वरी। तारे जगत मया तेहि करी॥
प्रकट शरीर सुमन की देहा। गुन अकेल को बरनै तेहा॥
चख चितवन गिरि कंचन होई। कस पग परस तरै नहिं कोई॥
जो न होत अस कबहूं हारा। को मम पंथ लगावत पारा॥
है अधार सुमिरन मेरे महमद अशरफ़ नांव।
यहि मग रस्ता नहिं चलत जेहिमा ना नाव॥
नगर सलोन ठानो तेहि केरा। चहुंदिश जगमा है उजियारा॥
जैसे भानु जगत चहुं पाहां। तस घर अशरफ़ दो जगमाहां॥
तेहिघर रतन प्रीति तर मला। पीर अता सब पूरण कला॥
जेहि मन प्रेम पंथ तेहि लावा। भा तेहि प्रेम दरश जिन पावा॥
कहूं दुइज पर दुइज न लहिये। दुइज ते निरमल सूरत अहिये॥
सब संसार दरश की आसा। दिये अशीश फिरै चहुं पासा॥
जेहिपर अता अता की होई। पाप हरा निरमल भा सोई॥
पीर दुलारे करीम के अशरफ़ पीर के नन्द।
निरमल दोऊ जगत महँ तेहि कलंक जस चन्द॥
महम्मद शाह देहली सुलतानू। कामी गुण वह कीन बखानू॥
छाजे पाट चीर सरताजा। नावहिं शीश जगत के राजा॥
रूपवन्त दरशन सुहगाता। भागवन्त वह कीन विधाता॥
द्रव्यवन्त धर्म्म सुह पूरा। ज्ञानवन्त खरग महँ शूरा॥
होय बलवन्त कटक कहि चोरा। देशवन्त चितवै चहुं ओरा॥
नावैं शीश हिन्दू तुरकाना। कापैं देश देश के थाना॥
देश देश तहँ के अमराऊ। कीन अचल होय करैं नियाऊ॥
बैठा आप सुपाट पर राज करै सुख भोग।
सुखी भई सब पिरथवी राय रंग जनलोग॥

है लखनऊ अवध मँझियारा। दरियाबाद नगर उजियारा॥
जहँ मखदूम केर अस्थाना। महम्मदबक्स जो जक्तबखाना॥
धन मखदूम पांव जिन दीना। ताहीअचल नगर विधिकीना॥
यहिकी कीर्ति कहाँलग गाऊं। अयसे योग जीभ कहँ पाऊं॥
पीर गँभीर पीर मजमला। पूरण ज्ञान संपूरण कला॥
पाप हरे परसे पग पाया। दुःखहरे निरमल भयकाया॥
तेहिके वंश अधिक उजियारा। शेषमहम्मद अलख पियारा॥

दरियाबाद जो सर कमल फूल रहा तस लोग।
किरपा महम्मद पीरकी करे सदा रस भोग॥

कस ना नगर होय उजियारा। जिनअस पुरुषलीन औतारा॥
मखादीम यह सब उजियारी। पंथ खोज कहँ दै औतारी॥
दाता सब औ पंडित ज्ञानी। अलख नाम कर करैं बखानी॥
काजी थान सब न्याव चुकावे। कतहूं अन्त होयनहिं पावे॥
और चौधरी बंग तहँ ठाऊं। तेहिके चलत सुखी सबगाऊं॥
बीस सिपाही तेहि बरदंडा। आवैं तमक करै सब कुंडा॥
तपसी बसै महासुख पावे। अयस नगर बुध पंथ चलावे॥

फूलरही फुलवारि जिमि तेही हाट बजार।
दायावन्त महाजन सभय कीन करतार॥

दरियाबाद मांझ मम ठाऊं। इमानुल्ला पिताकर नाऊं॥
तहँवां मोहिं जन्म विधि दीना। कासिम नांव आतका हीना॥
तिहूं बीच विधि कीन कमीना। ऊंच सभा बैठन सिरदीना॥
ऊंचे संग ऊंच मन भावा। तोथा ऊंच ज्ञान बुध पावा॥
ऊंचा पंथ प्रेमका होई। तेहिमा ऊंच भये सब कोई॥
ऊंचे पंथ देह और ज्ञाना। ऊंचे पंथ देउ भय माना॥

ऊंच करै साका जो कोई। दोउ जग तरै पंचमा होई ॥

नीचा धन्धा जगतमें ऊंच नाम करतार।
कासिम सुमिर निरंजना छांड़ि झूठ संसार ॥

रहा जो एक कपट मनरहा। सो परघट उघार में रहा ॥
हंसजवाहिर· बुद्ध उतारा। निरमल रूप सो दई सँवारा ॥
बलख नगर ब्रह्मा सुलतानू। तेहि घर हंस भये जस भानू ॥
आलमशाह चीनपति भारी। तेहिघर जनी जवाहिर प्यारी ॥
तेहि कारन वो भयो वियोगी। गयो सो छांड़देश होययोगी ॥
अन्त जवाहिर हंसघर आनी। सोजगमा यहिगयों बखानी ॥
सो सुन ज्ञान कथा मैं कीना। लिखूं सो प्रेम जगतरहै चीना ॥

कथा सुनावों अन्तकी जेहि विधिभयो वियोग।
तौनकथा अबगाऊं सुनो सो ज्ञानीलोग ॥

अबतो कथा सुमिरि मैं गाऊं। खण्ड खण्ड सो वरण सुनाऊं ॥
विनती सकल पण्डितन आगे। हौं सेवक जिनकर पुछलागे ॥
टूटेवचन लिखे भरजोरी। दुख न धरियो हीन बुधिमोरी ॥
तुममैं ज्ञान सुनावों सखिया। सोमैंअर्थ कहा और लिखिया ॥
कृपा करौ चलौ तो पारा। धीरज धरौ जो देउ उबारा ॥
तुम ऊंची विधि विधिनै कीना। यहिगुनमें बनियो विधिहीना ॥
बैठ समन्द चहूं भय पारा। झांझर नाव गरू सरभारा ॥

हौं बुधिमें नीच अति ऊंचसभा संसार।
प्रेमकथा जो गावहूं जो पूरय संसार ॥

ग्यारहसैउंनास ११४६ जोलागा। तब यह कथा प्रेम कविसाजा ॥
वरणौंशाह बलख बुरहानू। जस समरथ तस करौं बखानू ॥
अस दाता पण्डित बलहारी। न्योत रहे प्रथमी सारी ॥

कटक असोज देश उजियारा। द्रव्यवन्त नहिं घटै भंडारा ॥
कंचन बरसै नगरी माहीं। सुखियासब दुखिया कोउनाहीं ॥
रानी सहस अनेक सहेली। एक ते एक स्वरूप नवेली ॥
कंचन बरन लाल नग तारा। फूलन बीच सो क्षत्र सँवारा ॥
दीन विधातासुख विविध खंगा न एकोभोग।
पुत्रदीप बिन अन्धघर तासों भरा वियोग ॥
अदल निआव करै बहुभांती। सबकी चाह लिये दिन राती ॥
बैठे दिवस पाठ पर भोगी। रैन फिरै घर घर भा योगी ॥
परघट गुप्त देखि सब आवै। भोर भये सब पास बोलावै ॥
दुखिया दयरथ सौ सौ हाथा। सुखिया करै धरम के साथा ॥
दाता मया करै बैठावै। दुष्ट बांधिकै न्याव चुकावै ॥
जेहिते रार होय उरझानी। करै निरार दूध औ पानी ॥
ठग बटपार रहै नहिं पावै। पंथी पंथ चलत सुख पावै ॥
अस सुल्तानके गुन बहुत दरशनजक्तउजियार।
तेहिको धर्म्म नियाव से सुखी सभी संसार ॥
अति सुखभोग दीन विधराजा। एक वंश बिन सबै अकाजा ॥
सब सुख नेक औ अर्थ भंडारा। जो घरहोय दीप उजियारा ॥
रहै उदास करै ना भोगू। राज छांड़िमन सुमिरै योगू ॥
तिरिया जन जेहि रूप नवीनी। सो सब रहैं अधीन मलीनी ॥
यकतिस नार पुरुष के पासा। सोई माझ सेज कैलासा ॥
भई अधरात उठा सुल्ताना। भाजोगी बाहर फिर आना ॥
पाछे भई नार मग गामी। देखौं निकस करै कस स्वामी ॥
शाह निकस गढ़बाहरे भासो गिर पैठाढ़।
तिरिया देखै भवन ते शयन झड़ोका काढ़ ॥

निरमल रैन चन्द उजियारी। देखा शाह जो दृष्टि पसारी॥
देते दस सागर के तीरा। ठाढ़े हज़रत ख़्वाजह पीरा॥
फटा साज सीस पर खासा। पाव खड़ाऊं लिये कर आसा॥
हरियर रंग पीराहै गाता। मानो रूप भानु परभाता॥
लखि सुल्तानं निकट तब आवा। टेक चरन उर दास सुनावा॥
नाऊं अखल नहीं ना जानो। आज सुनो जो गुरु पहिचानो॥
कहा के ख़्वाजेखिजिर ममनाव। रखौं न ठांव जो वरणौं गांव॥

नखियो दिन करतार तें चहै वोही विधि होय।
भेंट भई मोहते अभी कहो जो इच्छा होय॥

तब सुल्तान सीस हरि नावा। दरशन गुरु सम्पूरण पावा॥
हौ सुल्तान जो तुमरे कीना। राज भंडार सबै तुम दीना॥
तुमते नाहीं भेद छिपाना। परघट गुप्त सबै तुम जाना॥
गुरु दाता कछु खांग न तोरे। पै यक खांग अहै घर मोरे॥
सब धन मोह दीन करतारा। यही शोच आगे अँधियारा॥
सुन गुरु टेक के धीर बँधावा। दीन अशीस वंश तो पावा॥
दियो वही जो वंश उजेरा। राख्यो नांव हंस तेहिकेरा॥

ख़्वाजह खिज़िर जो विमल गुरु सिद्ध अमलदैपीर।
पंडित भये दुख मनहिंमा बहुत लगाऊं नीर॥

कर पर मोध भरा सुल्ताना। आप अन्त का कीन पयाना॥
तेहिमा लिखा अर्थ निरताई। उलटा राज सेज पर जाई॥
तब सुल्तान मंडल को धावा। भेष उतार सेज पर आवा॥
विहँस नार पूंछी अस बाता। आज लख्योंपिव दरशनराता॥
तब गुरु मीठ कहा रस लावा। नेहचौ आज वंश हम पावा॥
तब रिस ते निश कीन हुलासा। पितातीनचल माथा पंथवासा॥

विहँस रैन पुनि कीन बेहाना। सो फल घड़ी रहैगा उधाना॥
डोलै करम तो करम गति गुरु कर वचन न डोल।
कासिम शब्द सुन गुरु मुख सतअलख के बोल॥
परघट होन लाग औधाना। हुलसा मन्दर जगत सब जाना॥
कल दीपक जो दिये विधाता। होय उजेर देश बिन राता॥
पूंछै मुख गुनी सब कोई। त्यों त्यों सार जगत की होई॥
जिन लग रंग गुनी फन आई। रहैं दिरग चहुंदिश नियराई॥
नगर कोटि सब गयो संवारा। साज राख सब बार दुवारा॥
गय नौ मास दसौं जब लागा। होश भयो तब मदनउजागा॥
घट घट सब तन भयो हुलासा। घरघर सब जानौ कपिलासा॥
दसौं मास लागा जबै भयोहंस औतार।
मानो सूरज आयगा मन्दिरभा उजियार॥
धन वहरैन पुत्र की होई। धरती स्वर्ग हुलस सब कोई॥
हुलस माय तेहि मये समाई। भा सुहयल औ बाज बधाई॥
हुलसापिता जय कुल उजियारा। हुलसादेश सो बलख बुखारा॥
ईश्वर अन्न कीन जो थाना। दारदेश ते दोऊ पराना॥
घर घर बाजै नन्द बधावा। मंगल चार लोग सब गावा॥
हाट वाट होयगा उजियारा। जानि वसन्त भूलि उजियारा॥
राता बरन रंग सब फूला। नाच कूद सगरो जग भूला॥
निरमल रजनी पुत्रकी भई महा उजियार।
हंस जन्म जादिन भयो सुखी भयो संसार॥
जब सुल्तान बैठि दरबारा। पुरा सुदान धूम जिन कारा॥
खोल भंडार सोन बरसावा। मोती भरभर थार लुटावा॥
हस्तपांति खाले मुंह बारा। घोड़े सहम खोले घोड़सारा॥

पांगुर रंग भये असवारा। देत अशीस चला संसारा॥
भोजन सब संसार जेंवावा। बस्तर सब प्रथमहिं पहिरावा॥
जेहि जेहि ठांव धर्म्म अस्थाना। तहँ तहँ आप गयो सुल्ताना॥
रहा न दुखी जगत मा कोई। दुख दालिद्र सबनकर धोई॥
मानुष पशु पक्षी सबै तन मन भयो अनन्द।
सुख सोहाग घरघर भयो लूटगयो दुखद्वन्द॥
पंडित देश देश के धाये। पोथी काढ़ जन्म दरशाये॥
देखा लक्षण सुफल उजियारा। सुमिरते वंश दीन औतारा॥
निरमल भयो जगत जग भानू। धरमौं नव दीने जगदानू॥
बहुतक राज जियत यह पाई। जाई रोम नयन भर आई॥
एकबार लूटै यह देशू। होई कर्तौं सो जोगी भेशू॥
पंखी के गिम आई कोई। कर जोगी लैजाई सोई॥
अन्त सिद्ध होय फिरै सयाना। होई मोर बलख सुल्ताना॥
सुफल घड़ी सायत सुभग भयो हंस औतार।
पै अस वेद जनावई कीन चहै करतार॥
बरस चार बीते सुख माहां। बालापन गति जोतिन ताहां॥
बिकसय लाग जो बार डुवारा। लागा होन तुरंग असवारा॥
देखैलाग लोग सब कोई। जो देखै तन मन बस होई॥
मोर बहादुर महा सयाना। भा बस तेहिके दरश लोभाना॥
माह रूप महँ अली दो भाई। दरसि योक भय रूप लोभाई॥
तब सुल्तानै कीन विचारा। अब तेहि सौंपदियों मनवारा॥
अपने जियत राज बैठाऊं। मयतज राज जाप चितलाऊं॥
वेग बढ़े बैठाय तेहि सौंप मीरको दीन।
आप चहै कहना कछू दयो चहै कछु कीन॥

दौला मीर नीर सुल्ताना । बस यह बात क्रोध मन आना ॥
जो गय राजहंस के हाथा । पुनि हम काह करब रहे साथा ॥
जो सम्बन भा कहे ते काजू । जिनते खड़ग लिये यह राजू ॥
मुखमें वचन कहे नहिं काहू । मन में राखै लाग सो दाहू ॥
जबलग जियत आप सुल्ताना । तबलौं साज सकै नहिंआना ॥
सबदिन लाग बढ़ावै साजू । और काज महँ करै अकाजू ॥
तबलग वृद्ध भये सुल्ताना । बालक ना घर भयो सयाना ॥

वयस पूजि आई जबै शोच कीन सुल्तान ।
नामय काज सँवारियो नाभा हंस सयान ॥

अतिही दुखी भये सुल्ताना । गा बल टूट अवध नियराना ॥
देश देशके बैद बुलाये । औषध मूर सबै लैआये ॥
जांचैं रोग औ परखैं नारी । थाके सबै उठे अहमारी ॥
कठिन सो रोग जाय नहिंजाना । ठाकुर दुखी जगत दुख नाना ॥
दीन सजीवन भय सुख गोरी । रोग मीच कहते भा दूरी ॥
मीचरोग सब केउ उपगजा । हाजुक बैद कोऊ था नाजा ॥
सबकर बैद सो आप विधाता । रोगिया बैद केर वह दाता ॥

मारै चहै जियावै समरथ बैद अकेल ।
कासिम सुमिर निरंजका भर मौजहैं मयेल ॥

देखा शाह मीच नियरावा । बालक कीन देखि पछितावा ॥
दौला मीर का बेग बुलावा । सन्त हँकार थान चलिआवा ॥
बैद बुझाय निकट बैठारा । बालक हंस गोद मुंहडारा ॥
कहा के सेवक तोहिं मैं चीन्हा । तबतोहिंसौंप हंस मोहिंदीन्हा ॥
देखौ हंस अहै यह बारा । थंभ्यो देश बलख बुखारा ॥
लैके हंस पाट बैठायो । आयस करो करत जसआयो ॥

दौला मीर कहा शिर नाई। मैं सेवक तुम आदि गोसाई॥

तुम ठाकुर मैं सेवक आदि अन्त और आज।
शीश निछावर घालहूं प्राणहंस के काज॥

बेदन भई प्राण अकुलाना। तबमन पूंछ शाह पछिताना॥
जनम न राजपाट चितलावा। अन्तकाल सो काज न आवा॥
तबलग काल जो आयतोलाना। निकसा प्राण छोंड़ अस्थाना॥
रहिगा नगर कोटि घर बारा। रहिगा देश औ कटककुंभारा॥
रहिगा राजपाट रनिवासा। रहिगा बालक जेहिमनआशा॥
द्रव्य भण्डार चला सब द्वारे। जखम हारजात जो आरे॥
जग बावर अरुभा तेहिपहियां। अन्तनिदान होयसब कहियां॥

कासिम नरतन पायके काज न एकौ कीन।
फिर पछिताय जो हारके तब मांगेको दीन॥

जेहिपर अन्त न छांड़े प्राना। सब आपन सो भयो बिगाना॥
पुरुष देखि सो मींजे हाथा। गा अकेल कुछगयो न साथा॥
जबते प्राण पयानो कियो। यहतन छांड़ सरे पट दियो॥
जे सब आनके शीश नवायो। ते घरते बाहेर बहिरायो॥
बाग मांझ कैलास संवारा। लै सुल्तान का थान उतारा॥
महा जुगत से सेज बनाई। दीन सोवाय उछार दोहाई॥
सोवा जबै छांड़ि संसारा। भा तेहिचेत पड़ी जबझारा॥

थांभे एकै पुरुष के सुखी भये संसार।
जबसे शाहअलोप भा उठी दुन्द औ मार॥

ठाकुर जब कैलास सिधारा। दुन्द उठा सगरो संसारा॥
चहुँ दिश उठे चोर बटपारा। पंथी चलै जाय सो मारा॥
जहं तहं डोलउठ सब थाने। झूठजोग झगड़े अरुझाने॥

बाउर लोग अन्ध संसारा। समझ ज्ञान नहिं किये विचारा॥
राजाराव सबै मर गयऊ। यह जगराज सो काकर भयऊ॥
जोड़ै द्रव्य औ घेरै नारी। सब देखै पुनि होवै ख्वारी॥
जो न होत अस वैरी राजा। कित काहूको होत अकाजा॥

नीच ऊंच जानै सबै होई नीच निदान।
चाहै पांवर दुष्टजो खोवै जन्म परान॥

दौला मीर कटक सो साजा। जहांलौ मीर राय औ राजा॥
पांचौ मीर हते सब साथा। सेवा सौंप दीन तेहि हाथा॥
लीना पाट औ द्रव्य भण्डारा। नगर कोटि और कटक संभारा॥
बैठा पाट फिरा नहिं जाता। परघट होय वैरी सुख राता॥
हंस जो रहा बीच अनवासा। दीनबिछाय लोग चहुंपासा॥
प्रथमी मंदिर घर से लीना। तो पुनि खोज मीर कर कीना॥
मोर बहादुर तीनो भाई। गये निकस घर देह लुटाई॥

फिरै दोहाई नगर मा देश कीन सब हाथ।
हंस मीत रोवैं सबै मिलै हाथमें हाथ॥

जहं लौ मीत हंस के भारी। गये निकस कर भये भिखारी॥
जीतै हंस पड़ा बन्दि खाना। भा वैरागी सोग समाना॥
रोवै सब रानी रनिवासा। देख देख बालक बन्दवासा॥
रोवै नगर केर नर नारी। परघट कहि नहिं बात उघारी॥
शोच करैं सुमिरैं करतारा। का तू करत काह कैडारा॥
अय सुल्तान काह यह कीना। बैरी हाथ राज दैदीना॥
चन्दन काट बबूर लगावा। शाह और के चोर बसावा॥

धन करता सब जगतके देखा तोर नियाव।
दाता बांध लुकाय के कीन गोसाई राव॥

यह अचरज देखा हम आजू। सिंह के मढ़ी सियारह राजू॥
चुगल चपल ते भले दरबारी। सत्य पुरुष सब भये भिखारी॥
आंखें मूंद बाज बैठावा। भयनस राज असाकर आवा॥
साध सिद्धते भीख मंगावा। कनक हार मरकट पहिरावा॥
धर्मवन्त गुरु घना कहावा। दरशन देश तुल्य सुख पावा॥
सेवकन दिन दिन भर्म दिखावै। वैरिन दिन दिन राज बढ़ावै॥
दयावन्त से दुःख न रोगू। पापी नष्ट करै रस भोगू॥

दाता कीन भिखार गति नष्ट न हाथ भण्डार।
देखा हम अचरज यही अंधाधुन्ध सरकार॥

दौलामीर गये सुल्ताना। चहुँदिश बैठ गये सब थाना॥
देशदेश उमराव पठावा। कीन हाथ जिनशीश उठावा॥
जो कोई कहै हंस की बाता। जिव मारै तेहि करै निपाता॥
निशदिन खोज मीर कर करी। धरि आनै का बेड़ा उधरी॥
चहुंदिशि लोग फिरैं तेहि जाहां। कोउना लखै अहै धौं काहां॥
मोर अहै बिन माथ लौ काना। बिकट कोटि कोउ लखै न जाना॥
तब उठि चहै सिद्ध गढ़ जाना। गढ़पति कीन चहै वश काना॥

दोला खोजै मीर कहँ मीर खोज सुल्तान।
प्राण अहीरी काल कहँ काल अहीरी प्रान॥

तीन बरस बीते बन्दखाना। हंस मंदिर भीतर अकुलाना॥
कहा माय मैं बाहर जाऊं। क्षण यक बाग देखिफिरआऊं॥
मातैं लीन हिये चितलाई। हीराफाट नयन जल छाई॥
देश दुवार खाए तुम पावा। तुम जान्यौ सब भयो परावा॥
वैरी घर छीका चहुं ओरा। निशिदिनजरौं देखिदुख तोरा॥
तब सुन हंस चित्तभा ज्ञाना। घरभीतर वैरी पहिंचाना॥

वैरिन हाथ लिखा जो थाना। कांपि उठा सुन माथ सकाना॥
देखा गुढ़ छींका सबै परघट बैरी पांच।
सोच रहै निशि दिन मनहुं जीव विधी गुनज्ञान॥
दोलामीर जो कीन गयाना। मयसेवक यह संघ का थाना॥
यकदिन भोट हाथ नहिं आवै। जेहि पावै तेहि छारमिलावै॥
अहै सो आज मांझमा घेरा। अभी उपाय करो यहि केरा॥
सिंह की बस सो सबही होई। सिंह छोट जनि जानै कोई॥
मारौं गुप्त न जानै कोई। चिन्ता अहै जाय सो धोई॥
भा यह खोज निडर हत्यारा। भूलगयो कौन चहै करारा॥
बैठे मंदिर भोर फिर आवा। मार चहै पय घड़ी न आवा॥
लै जमधर पैठे घरै बिन जमहोय फिराय।
मातासो कह पैरभय बालक कंठ लगाय॥
गोर बहादुर कीन विचारा। यहि विधि प्राण पुनि मारा॥
भै यक रैनि बहुत अँधियारी। बैठा आय सो कोट मंझारी॥
घरकी एक अहै जो जानी। बैठा थान चोर की बानी॥
सोवत दूत सभीको पावा। मात पूतको जाय जगावा॥
तब बालक लै उठी अयानी। कहा कि कामिस हंस भुलानी॥
हंसहि लीनभये मुहँ लावा। पायों जियत जान जिव पावा॥
कहा कौन बैठो मन चिन्ता। जाय चहै यक दिनसे मिन्ता॥
कहा भरम बेटी घरी हंस वारै किस रान।
दिन दिन वह बैरी बधै यकदिन जाय हरान॥
तिरिया तबहिं पांव लै पड़ी। मैंका करौं चलौं यह [illegible]॥
मैं तिरिया सगरे रंग बैठी। दूजे वैर नवोरी [illegible] बैठी॥
यह सुखराज बहोरे पाऊं। चहत ये हंम नहीं [illegible] चौऊं॥

जो तुम कहौ चलौं मैं भागी । यह घरबार लगाऊं आगी ॥
गाज पड़े यह घर उपराहीं । मित्र शत्रु नहिं जानै कोई ॥
अब मैं चनखा बहु बारा । पुनि निशि जाय होय भिनुसारा ॥
निकसे मातपूत बय दोई । मित्र शत्रु जानै नहिं कोई ॥

छांड़िचले जब नगर वह फिरिकै कीन जुहार ।
हियराफाटा मँदिर का ना बिसरै मीतपियार ॥

निकस मँदिरसों बाहर आये । तीनौ मीत तरलौ धाये ॥
बेग हंसमुख तरी चढ़ावा । मनभा कनि जीव असपावा ॥
औ धन बेगसों तरी चढ़ाई । आप चढ़े तीनौ बल भाई ॥
और गुलुचन्द मीरसिंह लीना । बालक लीन सकल तजदीना ॥
भे असवार तुरी बन हांका । मारग छांड़ि अंभ बनताका ॥
लखै न कहीं कांट अरु भारी । वन अंधियार रैनि अंधियारी ॥
अति सुकुमार परे वन ताहां । ज्यों बँद छोट भयो सुखताहां ॥

गये जो कोशपचासयक भयोभीरपुनि मांह ।
उतरि पड़ी तहँ मांझवन बैठ वृक्षकी छांह ॥

भा जब भोर सखी सब जागीं । देखि सून घर रोवन लागीं ॥
रोवैं सब अरु पटकैं हाथा । गये छांड़ि हम लगे न साथा ॥
भीतर मँदिर परा जब सांसा । जागि पड़े पहरूचहुं पासा ॥
दोलामीर उठा डर खाई । छोटा संग मीच नियराई ॥
बेग कटक सों भा संसारा । धायो खोज करै संसारा ॥
लिखे पत्र चहुं ओर पठाये । घाट बाट सब बन्द कराये ॥
बैरिन त्रिषहि बवा सो जामा । यक दिन अब ह्वैहै सुखआमा ॥

बैठा कांपै पाटपर पेटपचै नहिं पान ।
संग छुटा जो हाथसों यकदिन हुयेअपान ॥

बीता दिवस जो पै घर खावैं। भये सवार औ चाल पगावैं॥
चला हंस जोबन उजियारा। मग अंधियार भयो उजियारा॥
औ पहिरे गरे मानक हारा। मानौ चन्द्र चला लय तारा॥
तेरे कुल बालक दोउ साथा। दुःख भयो तब नायो माथा॥
तीनों पुरुष जान संघ मीरा। दुख सुख जाय सभा ते बीरा॥
कतहूं घेर संघ हट माहीं। कतहुं अनौर नियत बड़राहीं॥
कहुं अँधियार पड़े बनमाहीं। कहुं अस धूप न पावै छाहीं॥

कहुं बनफल भोजन करैं कहूं भूख की आस।
कहुँ पानीको दुख भयो कहूं नदी को बास॥

यहि बिधि चले जायँ बनमाहां। मानुष वंश मिलै नहिं ताहां॥
गाजो आनपान और भोगू। जोगयोअस यह जायनजोगू॥
मिला न सात दिवस जो पानी। कंवल कली काया कुँभिलानी॥
आप रहे जैसे सुकुमारी। तैसे भा ऊपर दुखभारी॥
बालक हंस तिन्हैं कुँभिलाना। हुलकाश्यामजो मानै जाना॥
हंसै लग बालक की रोई। यह दिन मोर संघात न कोई॥
आप तो जाय बैठ कैलासा। मोहिंदुखसौंप गयोनिजसाथा॥

जेहि दुख सों बहु नते पड़यों मांझ वन आन।
सो मम सों छूटत नहीं अब कृपा करो तुम आन॥

पुरुष लाग सभी समझावैं। औ कर जोरि के धीर बंधावै॥
जिन मन शोच करो दुख केरा। जिनदुख दीनसो करै निबेरा॥
दुःख भरो सत बांधे कोई। यक दिन ताहि महा सुख होई॥
देखौ देश जो पड़ा उजाड़ी। यक दिन बसी होय फुलवाड़ी॥
सरवर सुख सोऊ भर आवै। यकदिन उमड़ समँद बलजावै॥
वृक्षचरे बन हो नहिं नाता। यक दिन पत्र उठै रंग राता॥

DBA000010083HIN

जो पथ हंस रहै तो साथा। यकदिन क्षत्र फिरै यह माता॥
दुख बादर परलय मनहुं आई है मँझधार।
नाव बनी खेवक तहां यक दिन तारै पार॥
वह समझाय सो धीर बंधावा। पुनि परखै भयमन समझावा॥
जो जिव प्राणगये कुँभिलाना। केहि विधिजाव दूरि है जाना॥
माहरूप कह समया पाई। तुम ठानौ रहौ पछिताई॥
मैंसो हीर लिखौ कोइ गावै। लै भोजन कछुयोगी लावै॥
हांका तुरय तुरत लय आवा। वनका छांड़ि बाहरै आवा॥
देखा एक दिशातेहि घेरा। अहै सो वह बटपारन केरा॥
बाहर सबै गये बटपारा। तिरिया बैठी बार दुआरा॥
राखय पंथि लोभाय के करै कूद अरु नाच।
बहुवै दूत अहीर की आवै तबकी पांच॥
माहरूप आवा तेहि ठांव। पूंछा खान कौन यह गांव॥
तिरिया एक सलोनी नारी। आई निकस लियेकर झारी॥
मीठे वचन सोहावन बोली। उठतीवय औ उमँगी चोली॥
अभरन हीरा औ सोहै सारी। देखय मुख सुन्दर यह नारी॥
बिहंसिसोबात कही मुसक्यानी। दोऊ हाथ पिलावै पानी॥
उतरौ क्षण बैठो यहि ठाऊं। शीतल होहु तो पूंछौ गाऊं॥
क्षण महँ अर्थ बतावै कोई। रैनि बसै जानै जस कोई॥
हम दासी हैं पथिक की पुरुष हमारे चेर।
जानौ मर्म हमार तुम लिहो जो रैनि बसेर॥
महारूप पुनि कीन विचारा। मैं पंथी यह देश परारा॥
अछनानारि करै मन हारी। जानि पड़े यह प्रीति पियारी॥
हंसि हंसि बात कहै जो आला। है कछु सत्य दालमा काला॥

कहा कि मैं रहने नहिं आया। मोहिं ठाकुर यक काज पठाया॥
जब लग काज न कियो संवारी। तब लग नीर पियों नहिं नारी॥
कहि यह बचन त्रियै तब फेरा। आगे चला छांड़ि वह खेरा॥
चला जो चतुर हांकेरे भारी। वह कर मीच चली यह नारी॥

देखत नारी खड़ी ह्वै कहां गये वह मीत।
यह दुख जो मैं जानती कबहुं न करती प्रीत॥

माहरूप सुमिरत अस सांचा। जो अस होय प्राणतेहि बांचा॥
आगे चला देखि जो धाई। धर्म्म नगर सब बसत बिकाई॥
बेगि सो जाय बसाहन कीना। दीना द्रव्य छिना सोइ लीना॥
लीन भोग किन तुरत मिठाई। तेरे काज कह घास लुटाई॥
बिलँमन कीन भयो असवारा। केहुं लखा केहुं लखे न पावा॥
चला सो लौट सनोवन केरे। निकमाजाय निकट वह खेरे॥
तब लग घर आये बटपारा। तिरियन रोय कहा कर भारा॥

निकसे दूत अहेरी ते तीर्थनभा भट भेर।
भेष बटोही कर करे आयगये चहुँ फेर॥

पूंछा कहां जात हौ भाई। संग चलौ मारग कटि जाई॥
बोला संग कहां ते होई। हम पंथी अंछन सब कोई॥
तब पुनि घेर लीन चहुँ ओरा। मांगा देवा सत्र और घोरा॥
हम बटपार न छांड़ैं काहू। देव सबै जो चहै बनाहू॥
माहरूप सुनि संघ हंकारा। निकटनजाय आयजिव मारा॥
जो तुम तरीलियो अब आई। भयो चोर संकट दरशाई॥
खींच तीर तब गही कमाना। पति न जाय पै जाय पराना॥

देखा सन्मुख युद्ध पर कांपे सब बटपार।
काहुन कीनी पिछार तब फिरे लौटि शिरमार॥

आये धाय बैठि बन माहां । बैठी सेत हंस के जाहां ॥
दीन आय जो भोग मिठाई । कीन भोग भये तनवर नाई ॥
दीना तरे घास और दाना । रैनि बसे पुनि कीन पयाना ॥
भय असवार आन बन ताका । शंकाभइ कोउ देय न हांका ॥
जबलगदे जो बैरी कोरा । तबलग लीन न कतहूं केरा ॥
मारग कठिन चलत सुख नाहीं । जेहिदुखाड़ै जान तेहिमाहीं ॥
दिनभर मग माह्वा जल ताहीं । रैनि बसै कोउ देय न ताहीं ॥

कहूं नदी पुनि नार कहुं कहूं समन्दर पार ।
कहूं शीत बैरी कहूं कहुं दियो बनाहून हार ॥

मारग कठिन एक दिन आवा । भा असवार पार जिन पावा ॥
चहुं दिशि मीर बीच एक बाटा । मानौ नदी जौजापुर ना नाटा ॥
जौजा तुर्क थान घरबारा । दौला मीर कीर बैठारा ॥
देखे बैठि हंस कन आवै । चाह लिये कहुं जाय न पावै ॥
पंथी घेरलिये सब कोई । राखी नाव घाटपर टोई ॥
धर्म्म दयाकी बन नहिं जानी । द्रव्यलिये तो कुछ पछितानी ॥
यही सुपंथ चलै संसारा । कोउ बूड़ै कोउ उतरै पारा ॥

चला हंस मारग मथी जाय ठांव भा घाट ।
मांगी तरनी चढ़न कहँ पूछन लाग सुबाट ॥

जौजा मीर देखि पहिंचाना । यही हंस जो इन तौलाना ॥
बाँधा अस्त्र औ भयो संजोऊ । आये घेर निकट सब कोऊ ॥
कहत हंस यह चोर हमारा । केहिविधि उतर जाव तुम पारा ॥
मीर बहादुर सुनि भा ताता । कहा सुमानग भयो मुसकाता ॥
माह रूप कर गही कमाना । खैंचा तीर सो कीन सकाना ॥
माहअली पुनि खड्ग संभारा । औ न लीन और कीन सँभारा ॥

बाधा सब आगेका मारा। मस्न मिलै का गिर्द हमारा॥
जिस हयदर हमराह तव तिस आये दो हीर।
माहरूप सो उघघट ठांव हंस सो तीर॥
जौला तुरक परखि सा कारा। देखौ का धौं फिसाद उबारा॥
निकसी खड्ग वज्रकी वीरा। कांप उठा सब स्वर्ग पतारा॥
माहरूप के छोटे तीरा। फूटी पुरुष बीस यक तीरा॥
जो कोउ निकट हंसके आवा। मारि बाण तेहि छार मिलावा॥
पैठे धाय सिंह दोउ वीरा। बिसरे खड्ग भिलय औ तीरा॥
पड़ै जो चोट औ रनने मारै। करै जोभ्कार शीश नहिं डारै॥
भूतक जो चहै पड़ै भराई। भूतक भागि चले भव खाई॥
कठिन सो ज्वाला खड़्की दुजे पुरुष हंकार।
बैठै जबहीं सिंहगति भागी भर्म सियार॥
बैठ संघ सो भागि गंवारा। बचा धाय जौला बल वारा॥
तुमहिं मीर पर खड्ग चलाई। दांव देखि कै चोट बचाई॥
तब तो मीर सांगगन मारा। सुनौ हय लाग भये वह पारा॥
खैंचत आनत पड़ै खराई। आयो काल प्राणभर आई॥
जौला तुरक जो स्वर्ग सिधारा। छूटा पंथ भयो उजियारा॥
जस वह रोक सो लूटी बाटा। सस मुंह फूट अलूट निपाटा॥
जापर रहै प्रसन्न करतारा। का तेहि करै कोटि बरियारा॥
हांकभई परजन लिये मार लियो घटवार।
चढ़े नाव केवट कई कमी चलै वह पार॥
कनक दान केवट का दीना। बिनती बहुत भांति सो कीना॥
तुरतै दान जो कंचन पावा। लीन चढ़ाय बिलंब न लावा॥
सुमिरि निरंजन भा वह पारा। पार उतारि दीन करतारा॥

देश छांड़ि भय आनय देशा। अंछ लोग आनि पुनि भेशा॥
आगे हरिहरि एक पहारा। ऐसा कर हीरा बिधि सारा॥
चले जो नांघ चढ़े दे पाऊं। ख़्वाजेहखिज़र देखितेहिठाऊं॥
कानन देखि रूप गिरचीना। इनहीं मोहिं बंश यह दीना॥

सुकृत दिवस आवै जबै होय गुरू से भेट।
पाप औ दुख सब मेटिये औगुन जाय सो मेट॥

धाये सूय पांव लै पड़े। औरकर जोरि भई तेहि खड़े॥
मालिक हंस चरण लैडारा। अहै दास जो दीन तुम्हारा॥
लखा करौ जो शीश नवाई। पूछा नार कहां तू आई॥
कहां देश तो बलख बुखारा। कौन बिदेश यह मीर पहारा॥
धरिके आस उतर तब दीन्हा। मोहिकरतारदुःखीअस कीन्हा॥
बैरिन राजपाट धरलीना। मोहिं बनबास दीन असकीना॥
आप शाह शिव लोक भिखारा। मोहिं करतार महा दुख डारा॥

बिपत पड़ी सब आन कै जात गवायो भेस।
अब दो लो वोरी सबै पड़ी पराये देस॥

सुन लक्ष्मीप एक ना मानौ। जग महं सुखी न एकौ जानौ॥
वो वहि बीच जगत के आवा। काल के जाल बसै अरुझावा।
माखिन बुधि लावै बन माहां। लीन न छुवय धुवांदे ताहां॥
दीन जहां लग राजा रानी। काल के जाल बसै अरुझानी॥
सावज रहै जो घास उधारा। तेहिधर गजा रेतकै मारा॥
पंखी भाग रहे बनमाहीं। ताहि व्याध मोरे ततखाहीं॥
मय रही जल माटी कहाई। तेहिगिर कातकै भूक बनाई॥

जगमेंभिख पावा कवन मनमा करो विचार।
सखी बिधाता आपही देखा सब संसार॥

जो हुसपर बांधै सब भीरा । यक दिन देव लगावै तीरा ॥
चले जाव तुम मूये माहां । चाहे दिवस फिरै तो ताहां ॥
सोच करो जिन मालिक मीरा । करो अबहिं निबाह तेहि केरा ॥
अबहीं आय संग तो पासा । पुनि कहुं जाय करो अब बासा ॥
जो जेहि के जस लिखा लिलारा । सो सो भय को मेटनहारा ॥
तब गहि लीन हंस की बाहीं । राखा हाथ शीश उपराहीं ॥
आये हंस जो देश पराये । भूल्यो जन यह बचन हमारे ॥

जाय के हंस बिदेश महँ चारि वचन सिखि लेव ।
ताहू महँ दुइ भूलियो दुइ सुमिरन चितदेव ॥

भूल्यो तुम जो धरमहि कीन्हों । अयसन जान्यो मैं कुछ दीन्हों ॥
दीन हार सो वह करतारा । दूसर का कोइ देय बिचारा ॥
भूल्यो जो अधरम कहुं देख्यो । कियो न कतहूं मनमहँ लेख्यो ॥
जेहि कर पाप सो तास कहाई । जो तुम किहो सो माथे आई ॥
सुमिरत रहो काल की घड़ी । जो पल पल है आगे खड़ी ॥
सो अस जान पाप जिन कीन्हो । काल घड़ी तेरे तन चीन्हो ॥
सुमिरत रहो नाम करतारा । जेहि सुमिरै पावै भवपारा ॥

सुमिरि दास करतार कह काले जाय भुलाय ।
जगतडरै सब काल कहँ तुम किनकाल डराय ॥

सत्य ना तजो गाढ़ जो पड़ै । सब ते गाढ़ कठिन जो डड़ै ॥
तज तेहि धर्म भोग के बाहां । धर्म जो करै दोऊ जग माहां ॥
दया न तजो जन्म जो पावा । प्रेम चाह ते अजस लगावा ॥
करब न केऊ द्रव्य के पाये । मा जग भ्रमर गर्भ निधिआये ॥
क्रोध न कियो होय जेहि राजा । क्रोध ते आपन होय अकाजा ॥
झूठ न कहो पाय कछु आशा । झूठहि करै धर्म की नाशा ॥

प्रेम न तजै कहीं दुख होई। दया ते मीत विधाता होई॥

धैलन मन पानी भरै नरक बूंद पड़जाय।

नरक हरत पानी बसै खेलत लेत नशाय॥

देख्यो वचन न भूल्यो भाई। जो चाहौ तुम जगत भलाई॥

जाव सो रूम शाह के पाहां। दुःख जाय सुख बरसै ताहां॥

तब लै हंस चरण शिरनावा। भयो सुचित ज्ञान गुरुपावा॥

भा असवार छांड़ि जो पहारा। चला रूम का पंथ सँवारा॥

अस वह देश बसा निरमला। पंथी पंथ जाय तेहि चला॥

निशि दिन चलै पंथ मा जाहीं। कहुं उपास कहूं कुछ खाहीं॥

कहुं उजाड़ कहूं बड़ गाऊं। देखत चले जायँ सब ठाऊं॥

बरस दिवस ना थिररहे चलेगये दिन रैन।

पहुंचेजाय सो रूममहँ तबहिं भये मन चैन॥

मन्दिर सो एक कह्यो करलीना। जाय बसेर तहां पुनि कीना॥

दिन दशमहँ यह भयो बखाना। सबै अमीर शाह पुनिजाना॥

अनवर खिलखीं जो सुनिपावा। भा असवार भेंट का आवा॥

देखा जन्म भूमि कर राजा। नावाशीश हुलासि मनसाजा॥

मिला जो धाय कुशल सब पूंछा। आयो कैस देशकर छूंछा॥

अर्थ पूंछिकर मन पछितावा। कहा चलौघर आपन आवा॥

वेगि तुरय सुखपाल चढ़ावा। सेवाकर मन्दिर लै आवा॥

सिंहासन बैठारि कै सेवा कीन सोवास।

तबलगश्रामो हंस का सुना महमदसुल्तान॥

सुनाजो हंस बलख तजिआवा। सुनतहि सब उमराव पठावा॥

आये सबै हंस के पाहां। शीश नवाय कहा पुनि ताहां॥

आज तुम्हें सुल्तान बोलावा। चलो वेगि जो आयसु आवा॥

तब मन पूंछि जो कीन हुलासा। गुरुकर वचन आन परकासा॥
से सब मीत बैठि असवारा। चला सो बैठिकरन दरबारा॥
जाय सो पँवरिमांझ मग दीन्हा। सातौं पवँरि नांघ सो लीन्हा॥
देखी मार कनक चहुं ओरा। ठाढ़ी सैना मिली न ओड़ा॥

कनक कोट सीढ़ी सबै रतनन जड़े कुबेर।
मांझ सिंहासन ताहि की ताते अधिक उजेर॥

बैठा आन आप सुलताना। निरमल रूप जगतकर भाना॥
जे उमराव मीर जिनताई। करजोड़े ठाढ़े तेहि ठाईं॥
गयो हंस अनवर के साथा। जाय निकट होय नायो माथा॥
लखि सुलतान मोहि मन गयऊ। तन मन मोहि रूप बशभयऊ॥
कर हुलास पुनि पास बोलावा। हिये लगाय निकट बैठावा॥
पूछा की हम कस व्यवहारा। कस छांड्यो घर देश तुखारा॥
तबै हंस सब बरन सुनावा। जस घर छूट रूम महँ आवा॥

भा प्रसन्न सुल्तान सुनि धराशीश पर हाथ।
तब से खावन्ह मंदमय छत्र फिरा दिन रात॥

अब तो राज रूम कह करौं। आपन छत्र शीश तोहि धरौं॥
मैं तोहिका आपन सुतकीना। सेवन छत्र पाट के लीना॥
कहि यह वचन दीन गुरुमाला। कृपा कीन भय कोटि रसाला॥
पुरुषन दीन महापहिरावा। सुबस दीन औ खड्ग बँधावा॥
हाथी घोड़ दीन सुखपाला। द्रव्यदीन और कीन निहाला॥
आपन साज दीन सुलतानी। कीनतुरन्त जो आपन आनी॥
मोतीमहल रहन को दीना। अनवर मीर को सेवक कीना॥

धनकरता प्रभु जगत के धन्य तो अर्थभँडार।
लीनो लगै न बार कछु देतो लगै न बार॥

निकसा हंस पहिर पहिरावा। चला मँदिर जहँ वासा पावा॥
चले जो साज शाह सुल्तानी। भाग अतून पड़े नहिंजानी॥
बैठा जाय मँदिर मँझियारा। देखै जस दरपन उजियारा॥
महल सराय बनी चहुं पासा। बरन बरन के बने अवासा॥
बरन भूमि सो लिये हलोरा। माणिक रूम सो भूलहिंडोरा॥
रची बार बैठक चौपारी। लागी भांति भांति फुलवारी॥
तहां सो लीन जायके वासा। मँदिर देखि मन कीन हुलासा॥

बैठिजाय घर भीतरे दुख दारुण गा धोय।
करौं बेगि निरमल तुम्हें ज्योति भई है सोय॥

बैठे पाट मँदिर के ताहां। अर्थ भण्डार भरे पुनि ताहां॥
बैठे भेटक सेवक चेरे। एक सो एक स्वरूप उजेरे॥
बहुत सखिन सुल्तान पठाईं। हंस कि सेव करन सब धाईं॥
जे उमरावगन सब आवैं। सेवा करनिन आयसु धावैं॥
ठाढ़ रहैं सेना दरबारा। मिलै न कतहूं बार दुवारा॥
दूज देश बहुत के पावा। राव पुरुष सब शीशनवावा॥
भयो जो हंस रूप सुन बारा। लागे लाग राज दरबारा॥

हस्ती घोड़ा एकमैं कटक असूझ अपार।
ठाढ़रहै दिन रैन तहँ मिलै न बार दुवार॥

अति सुल्तान मया जो कीना। आपनचाह अधिक करदीना॥
करै न छिन बैन ते पूरे। रुकै सुलाल नयन मा पूरे॥
कबहूं आप थान चलि आवै। कबहूं अपने पास बोलावै॥
गयो पराण हंस ते लागी। मारन हंस रह्यो बैरागी॥
भयो जो हंस रूपपुन बारा। गयो भुलाय सो देश दुवारा॥
लाग्यो चाह देश की लहई। औ पुनि दान जगत को दई॥

भा सो सुखी सभी सुख दीना। जिनसुखकहाअधिकतसकीना॥
दान देतभा ऊंच सो भयो सो जगत बखान।
जो दुख दीन लोभान तिन का दुख पूरनआन॥
नारि पुरुष ते सबै लोभाना। घरघर तेहिकर करैं बखाना॥
मोहे संगी सब सुलतानी। मोहे राज राव औ रानी॥
मोहे पुरुष रहे जो सेवा। लीनन द्रव्य दाश के लेवा॥
चहुंदिशि होय निकसे असवारा। करे जोहार सकल संसारा॥
दिये अशीश सबै दुनियाई। सदा रखै यह ठांव गोसाई॥
सब जग दानदिये बिन मांगे। जिन असजन्मदीननहिंखांबे॥
घट घट मेरे गयो समाई। कोउ नहिं कहै कभूं कहुँ जाई॥
बरसदिवससो बीत अस तबलगभा असखेल।
गयो मांझ फुलवारि वह सो दिन लगे अकेल॥
सपना दुष्ट पड़ा पुनि माहां। देखै अहो कहूं घर माहां॥
रचा मंदिर कैलाम सिधारी। फूलन बीच रची फुलवारी॥
दुलहिन वरण चन्द्र अस नारी। थोड़ी बैस बदन सुकुमारी॥
सिंगार सोलहो अभरन साजे। गुंजत भ्रमर बीच सो मांझे॥
शीशमेंअधिकज्योतिउजियारी। आयगई भीतर सो नारी॥
देखांते हंसभयो अरझाना। गयोमोहि जो प्राणलोभाना॥
लीन्हे भोग सो कनक कटोरी। पिव पिव ठाढ़ि करैकरजोरी॥
बांह गही पुनि हंसकी लीन निकट बैठाय।
कही भोग भावै तुम्हैं जो तुम दीन खवाय॥
तब लागी वह भोग खवावे। औ आंचर ते वायु डोलावे॥
इके कौर प्रेम रस दीन्हा। गयो लोभाय प्राणवश कीना॥
कोकिल सम बोली सकुचाई। चमकी दशन जबहिं मुसकाई॥

हमैंछोड़ि पियाआन न कीनो। आज कियो तैसे नितकीनो ॥
कह यकमाणसों तुम मनलीना। दूसर कहा चहूं कहँ दीना ॥
हुलसि जो बीन हिये मनलाई। तबलग जागिपड़ा दुखआई ॥
देखी जागि सेज नहिं नारी। वही सुपाट वही फुलवारी ॥

शोच आग उपजी तुरत उमड़े भरजल नैन।
सूरत कहां हेरान यह कहांगये वह मैन ॥

मनमा शोच कहां अब जाऊं। पूंछ लियों मैं नाव न ठाऊं ॥
कबहुं स्वर्गकी कबहुँ पतारा। कबहुँ भूमि की कबहुँ पहारा ॥
कबहुँ सिंघकी है बनमाहां। हीरन फँसे पाइ यों ताहां ॥
कहां गयो कैलास अनूपा। कहँ वह गई हसीन स्वरूपा ॥
कहां सो भोजन कर सों चाखा। कहां सो शब्द कोकिल भाखा ॥
को अब वह जो जाहि बतावै। को काया ते प्रान मिलावै ॥
दुख अपार सो रोवन लागा। भूला सुख उपजा बैरागा ॥

कासिम आगी विरह की पड़ी बहुत तन धाय।
दहकी विरह झकोर बहु अबकेहि बार बुझाय ॥

कालदशा दीनो विष खाई। रूम बलख सब गयो भुलाई ॥
बैरी अस लागैं सब बनिता। छुटिगइ देश नगरकी चिन्ता ॥
रह गइ एक सूरत नहिं पासा। छुटिगा भोग सबै सुखवासा ॥
निशिदिन जाय थान पुनि सोई। पड़ै न दृष्टि उठी पुनि रोई ॥
देखि उदास भा रूम उदासा। करैं अन्देश कहा मन बासा ॥
पूंछै उतरदेय नहिं सोई। का जानै काकी को होई ॥
सगरी मीर प्राण पुनि सोगू। औषधि दूरि न पावै रोगू ॥

सपने दरश दिखायके दीन हिये दुखदाह।
कासिम विरह सचार भा कहता हिये उगाह ॥

कहूं जो कहता अहै जस होनी। जहां चैन वह नार सलोनी ॥
अब यह काह बिचार कीना। उदय बार जन्म तस लीना ॥
आवागमन देशकर राजू। उनहे मात पिताकर साजू ॥
जिन सपने महँ दरश दिखावा। कहूं कता जिसभयो मिलावा ॥
सपने सखा दरश उजियारा। सो भा जन्म चैनऔतारा ॥
अधिक भाव भक्ति जिन कीना। अधिकदियो नहिं दुःखदरीना ॥
हंस रूप लखि भयो उदासा। जयसो होन विरह ओकासा ॥

जेहि विधि सो सुखवो मिली भयो विरह परतन्त।
तौन कथा अब गावऊं जन्म मरण सो अन्त ॥

बरनौ चैन जहां मन बासा। जहां वहज्योनितहां की आसा ॥
काबरनौ तिहुअन की शोभा। जो कोउगो अथान सो लोभा ॥
राजा राव सबै तहँ दाता। देश न सीत फूल जिन राता ॥
बीझावन तहँ अमृत फूले। योगी पिता बहुत तहँ भूले ॥
हरियर लहक रहे तहँ शाखा। पंखी यान बोलैं बहु भाखा ॥
सरवर भरे सो लेन हलोरा। कनक पखान बांध चहुँओरा ॥
आवें फिरें चीन की नारी। सागर तीर जहां फुलवारी ॥

योगी थान भुलान सो बहुरि फिरानहिंकोय।
देखे भोगी जन्म सुख फूलरहे तहँ सोय ॥

बरनो जैस नगर उजियारा। लागि रहे नित हाट बजारा ॥
आवें तहां भरन पनिहारी। भूलें कोट औ देखि बखारी ॥
कतहूं चढ़ाय नाच नचावें। कहूं सुरस वा नाटक लावें ॥
कहूं भगवती भेष जो कीन्हे। कहूं गहकटा सो फांसी दीन्हे ॥
कोउ नचाय मिरदंग बजावें। कहुं मरकट बहुभांति देखावें ॥
कहूँ भेदिया बांसन चढ़ै। कहुं सुबसवा कंचन मढ़ै ॥

कोइ भोला सो बंसो अरंगा। मोल हेराय भये तेहि संगा॥
काहू वचन वसाहकी चला लाय तेहि संग।
काहू मोर गँवाय के भला सुवसवा रंग॥
ऐसी हट बसन उजियारी। बैठें तहां चतुर सुपियारी॥
सहस अनूपम बसत लुकाई। कोऊ लेय कोऊ पछिताई॥
काहेक फिरें औ शाह गँभीरा। बेचें मानिक मोती हीरा॥
एक तो सोच करें वन सांठी। एकतो लीनद्रव्य जेहि गांठी॥
एक बेसाहैं माणिक मूंगा। एकतो मूरख होय भये गूंगा॥
एक तो बहु लियो देखन हाटा। एक तो फिरें निहारत बाटा॥
एक भरे भर देश सिधावैं। एकतो हंस पुनि मोर गंवावैं॥
एक भरन कहँ आवहीं एक भरें लेवार।
एक लेय पहुँचे घरें एक ठगें बटपार॥
बरनो कोट जैस गढ़ बांका। लागअकाश जाय नहिंताका॥
चहूँ दिश फिरें अगम नथकाई। मथे समन्दर थाह न पाई॥
साजे कटक रचे चहुँ ओरा। खेलन अश्व सांझ औ भोरा॥
बांधे अश्व रहैं चहुँ ओरा। का जानैं कबहोय हंकारा॥
औजत साज रहै सुल्तानी। बरनि न जाय अहै जेहिबानी॥
निशिदिन डंक बजे दरबारा। उठइ इडोर होय झनकारा॥
नित घड़ियाली घड़ी बजावै। घड़ी घड़ी मनचेत डोलावै॥
भरी घड़ी बोलै जबै तब बाजै घड़ियाल।
गजर बाजिगा बावरे अबहूं चेत संभाल॥
आलम शाह तहां सुलताना। सो ठाकुरगढ़ ताकर थाना॥
सब गढ़पति तेहि शीश नवाऊं। वहिकीस्तुति निशिदिनगाऊं॥
जेहिकी राज करै सब कोई। तेहिकर गुन गावै सबकोई॥

कटक असूझ रहे नित साथा। नावैं सब प्रथमैं पुनि माथा॥
द्रव्य भंडार भरे नहिं घांकी। दहिनेहोय जो वह तय मांकी॥
भूमि अलोप भई धन छावै। जो गढ़पति गढ़ बाहर आवै॥
यकदिशि राय राव हिंदवाना। यक दिशि मीर रहैं तुरकाना॥

अयस साज साजै तहां करै जगत पर राज।
दाता वह सब जगतकर जगत बसै मुहताज॥

बरणों कोटि मांझ कैलासा। निरमल ठांव महासुख बासा॥
कनक मँदिर तहँ बहुतसँवारे। चुनि चुनि रतन तहां बैठारे॥
मलयागिरि चन्दन तहँ लावा। गजमोतियन तहँ चौक पुरावा॥
तेहिमा लागि बहुत फुलवारी। सदा भरे अमृत बहुबारी॥
सरिता चारि बहैं तेहि तीरा। भरें सखी तहँ कमलशरीरा॥
तहां बसै मुक्ताहर नारी। महासरूप से दई सँवारी॥
तेहि घर जन्म जवाहिर बारी। महासरूप महा उजियारी॥

जबते जनमी बार वह किरन छिटक चहुँपास।
मनहुँ चन्द्रमा गगन ते उतरा मधि कैलास॥

जबते जनमी मूरति गोरी। घर बाहर भै जोति उजोरी॥
बरणि न सकै कोऊ वह जोती। तीन लोक नहिं दूसर ओती॥
पदम सुवास सो वासय अंगा। भँवर पतंग फिरै तेहि संगा॥
पंडित वेद पढ़ै बहु भारी। चौदा विद्या सीखे सारी॥
पढ़े जो चारिउ वेद पुराना। रहा न वहि ते भेद छिपाना॥
कहै जो मीठा वचन अमोला। तीनों लोक लिये बिन मोला॥
खेलैं सखी साथ कैलासा। मात पिता त्रिय होय हुलासा॥

मोहनी मूरति सोहिये शुभ सोरा १६ सिंगार।
जग मोहन का परघटा लोग मांझ करतार॥

यक दिन चली लखन फुलवारी । लीने संग सखी सब बारी ॥
सबै सरूप कमलकी कोई । सब मूंदैं निकसै नहिं कोई ॥
का वरणौं जस रंग सहेली । कोइ गुलाब कोइ रंगचमेली ॥
कोइ कमला कोइ मालति गोरी । कोइ बेला मधुमालति भोरी ॥
कोइ चंपा कोइ कुन्द नवेली । कोइ हरसिंघार कोई असवेली ॥
जेहि जेहि वरण फूलफुलवारी । तेहि तेहि वरण बनी सबनारी ॥
पहिरे रंग कुसम रंग जोरा । झिलमिलचयनकुसुमरंगबोरा ॥

चला चन्द फुलवार ज्यों लिये नखत सब नार ।
पंखी देखि भुलान सुधि रहिगे पंख पसार ॥

चला चांद लेने संग तारा । मयमा सब देखै संसारा ॥
बिलमे जाय मांझ फुलवारी । धाईं सबै चहूंदिशि नारी ॥
मानहुँ चन्द्र किरण करधाई । सोहैं बरन बिरछ लरवाई ॥
डारन डार उपाथन पाता । पल्लव उठै जनो रँगराता ॥
सखी सो आप आपका धावै । तरु फूलन सब हीं अरझावै ॥
भटक गई जो सखी सहेली । रही जवाहिर ठाढ़ अकेली ॥
भरा थान जल सागर नीरा । ठाढ़ मनहुँ शशि तेहिके तीरा ॥

फुलवारी चारों दिशा पंछी सो मध्य हलोर ।
फूलरहे तेहि सर कमल मधुकर करें कलोर ॥

तहां ठाढ़ शशि कमल शरीरा । लहरैं लेय लाग जलतीरा ॥
हुलसि नीर जो लहर उठावैं । उमड़ै चरण चहूं का धावैं ॥
चकई बिछुड़गई वह बाटा । जानिरैनि लखि चन्द्रललाटा ॥
तजि फुलवारि भँवर उठिआये । कमल शीश गंजन सब छाये ॥
सारस शुक पंखी जिनताईं । निरखि जाय तजि भोगचराईं ॥
दादुर बैठि विहंगम पासा । दरशन देखि भभूयें वासा ॥

पवन लोभाय लिये तहँ मासा। विकसकली भइ बास सुवासा॥
रहैं लोभाने दरश सब पंखी पुनि फुलवार।
मेघ झिकोरैं तन उठैं श्याम घटा अँधियार॥
तेहि खन एक परी तहँ आई। चीर छोड़ कै लाग नहाई॥
छांड़े चीर जो सागर तीरा। पैठी आप धाय मँझ नीरा॥
तो शशि लीन सो धाय उठाई। देखत परी निकस तब आई॥
रहै जो आप रूप अभिमानी। देखि जवाहिर रूप छिपानी॥
आय निकट ह्वै मांगे चीरा। दिहौं चीर फिर बैठौं तीरा॥
मैं अब आन भयों वश तोरा। तिहूं विशुद्ध गये बुधि मोरा॥
तुमकहँ दीन जो अयस सँवारी। तो वश भयों गह्यौं सब हारी॥
कहा जवाहिर बिहँसि के चीर दिहो तुम लेव।
आपन अरथ बताव मोहिं सब वाचा मोहिं देव॥
कहूं अरथ जो पाऊं पयरा। बैठौं फेर कमल पद तयरा॥
बाचा कहूं सुनो सो मोरी। रहौं जन्म भर दासी तोरी॥
तो हँसि चीर दीन शशि गोरी। बैठी फिर दोउ आसन जोरी॥
मिलिकै कहा जो भेद उघारी। मैं तो परी परी की मारी॥
तब सुल्तान परिन का राजा। माथे मौर सबै का साजा॥
देश मोर सो नगर नगीना। सो तो काज सबै तज दीना॥
मैं संग रहौं सखन जस तोरी। कहौ न भेद मोर कहुँ गोरी॥
तबै जवाहिर उठि मिली लाय हिये मां अंग।
हम तुम गोइ जन्म की आज भइन यक संग॥
अब जनि सोच देशकर मानहु। देश हमार सो आपन जानहु॥
सखी मोर आहै सब तोरी। तुम सो बहिन जन्मकी मोरी॥
भय यक गात प्राण दोय गोरी। बरणि न जाय बनी जस जोरी॥

तबलग आई धाय सहेली। लीन जो भर फूलन की सेली॥
आई भर लीने सब हाथा। देखि सखी को दूसर साथा॥
केहु न लखा परी यह होई। है कोइ चीन नगर की गोई॥
कोइ उमराव केर यह बारी। बैठी कमल तीर उजियारी॥

तीर सहेली सागरा लीन जवाहिर वार।
सोह सहेली वरण बहु फूल मनहुँ फुलवार॥

भईं यक ठौर जो सागर माहां। लगीं अन्हाय बिहँसि सबताहां॥
सब पहिराव जो धरें उतारी। सागर मांझ पड़ै सब बारी॥
पैरैं धाय धाय सब नीरा। पंखी लज बैठे सब तीरा॥
खेलैं लाग चन्द्र लै तारा। देखा स्वर्गलोक पुनि सारा॥
सब अबला औ बारी भोरी। खेलैं खेल जो सांवर गोरी॥
कौतुक खेल करै जल माहीं। काली लट ऊपर पैराहीं॥
कमल कुमोद फूल यक तीरा। यह अचरज देखा मँझ नीरा॥

कमल कुमोदह गोरि सो मिलि करैं सरोवर केल।
मोहा सब शिवलोक लखि देखि कमल कर केल॥

करि स्नान पहिर पहिराऊ। भईं उताहिल मंदिर जाऊ॥
कहा जवाहिर संवरो गोई। लिहौ खेल जो खेलब कोई॥
भोर कहां आवो फुलवारी। जब सब जाव गवन ससुरारी॥
खेल लेव जो खेलव गोरी। जबलग रहौ पिता घर भोरी॥
अन्ते इहां रहब नहिं होई। कौन रहैं नइहर मा कोई॥
बारी बयस कहां पुनि पाउब। बयस गये कित खेलै आउब॥
भई हुलास खेलि दिन चारी। जबलग अहै पिता घर बारी॥

बहुरि कहां बालापनो कहां सखी सब साथ।
कहां अकेली पाउब भोर परब पराये हाथ॥

लै सब सखी बैठि फुलवारी। लागीं लेन फूल भर बारी॥
जहां जो अच्छा तहँ लिपटानी। सब रहे आप आप अरुझानी॥
कोइ अंगूर आप कर झोरै। कोइ महुवा कोइ पंड खजोरै॥
कोइ अमरुद कोइ खेनी सेवा। कोइदाड़िम कोइकिशिमिशमेवा॥
कोइ कमरख कोइ नारंग राती। कोइ गुल गुल अमृतकी जाती॥
कोइ बदाम कोइ दाख छोहारी। कोइनरियल कोइ लौंग सुपारी॥
कोइ कटहर कोइ बड़हर लीना। कोइ बेरी जामन चित दीना॥

कोऊ लीन ब्रजचन्द्र चढ़ कोऊ उनाई डार।
इच्छा भर पाई कोऊ कोऊ चढ़त गईं हार॥

लागीं फूल लेन सब कोई। जेहिके मन इच्छा जस होई॥
कोइ केवड़ा कोइ केतकी लीना। कोइ कली बेला चंपा लीना॥
कोइ केसर कोइ फूल चँबेला। कोइ गुलाब कोइ सेवती बेला॥
कोइ केसर कोइ चंपा मोही। कोइ कुन्द कोइ जाही जूही॥
कोइ रहमालति कोइगुललाला। कोइनरगिसकोइशोसनलाला॥
कोइ सुखदरशन केसर लिये। कोइ सिंगारहार चित दिये॥
कोइ चन्दन कोइ फूलनेवारी। कोइ फूली सेंवर तरभारी॥

लै भर फूल सहेलियां सबै भईं इक ठौर।
फुलवारीतजिनिकसि सब चलीं मँदिरकी ओर॥

चलीं जो बाग छांड़ि सबबारी। करि कलोल रंग खेलि धमारी॥
कोइ पहिरै गरे हार हमीला। पुनि कोइ हार फूल करि खेला॥
कोइ लीनी फूलन लौ लासी। कोइ माला पहिरै परगासी॥
लिये पहिर अभरण सब बारी। पैठीं मंदिर धाय मँझारी॥
हुलसैं सब मंदिर की नारी। देखी बरन बरन फुलवारी॥
मातैं लीन हिये मन लाई। हुलसी छाय न हिये समाई॥

तबलग घर आये सुल्ताना। देखौ फिर अमृत के आना॥
दृष्टिपड़ी बारी तबे लिहे फूल भर डार।
करो वह कितघर बाहिरे कस निकसी ये बार॥
देहौं अभी धौरहर बासा। औ सब सखिन रहैं तेहिपासा॥
फिर ना उतरि भूमि पर आवै। खेलै जाय न बाहर पावै॥
तब पायो धौराहर ऊंचा। जेहि नहिं पवन उवेश पहूंचा॥
रचि रचि सातो खंड सँवारा। बरन बरन सगरो उजियारा॥
पहिले खंड सुपारस लावा। पियर बरन कंचन दिखलावा॥
जो कोइ चढ़ै धरै वह पाऊं। कंचन होय छोट वह ठाऊं॥
दोज खंड हरियर जगदीशा। बहै पवन नित मेघ बरीशा॥
तीसर खंड अनूप अति रूप मंदिर उजियार।
दरशन जोथे खण्डमहँ दृष्टि पड़े संसार॥
पँचवां खंड महारति सारा। लागे रतन करै चमकारा॥
छठवां खण्ड अनूप सोहावा। मोतिन कर तहँ चौक पुरावा॥
सतवां खण्ड सबै उपराहीं। तेहिमेंअधिककोऊ जगनाहीं॥
बरणि न जाय अनूप अवासा। तेहिके तर सातौ कैलासा॥
हीरा लाल अनीट तिनलाये। दै दै गार कपूर कलाये॥
कनक खम्भ विचित्र तहँ ठाढ़े। चुनिचुनिरतनयतन गढ़काढ़े॥
मोती औट चूंन भुइ लावा। समुद्र हलोल जहां उठिधावा॥
धौराहर अस ऊंच वह बिजली कोटि भंपास।
फिरै चक्र जमका तरै पवन न पावै वास॥
तहां सो लीन जवाहिर बासा। औ सब सखी कमलके पासा॥
रहैं सखी सेवा चित दीने। हाथै हाथ चरण वह लीने॥
करैं हुलास सदा सुख भोगू। नहिंजानैं चित लावो सोगू॥

शब्द तहां अधिको रस देई। देश देशकी कथा करेई॥
मिलिगइ एक मते दोउ नारी। मनमें एक तिन्है लगिन्यारी॥
एक कमल जस पंडित ज्ञानी। दूजे मिली वह शब्द सयानी॥
निशि कह भेद कहै यक पासा। दिवस सखिनसंग करें हुलासा॥
जग ऊपर धौरहर बहु सखिन सहस दुइ साथ।
खेल महाआनन्द सों पिता राज सुख हाथ॥
जबते भई संयोग सयानी। देश देश के रूप बखानी॥
जहँलग देशपती सुनि पावा। सुनि बखान मन चाह चलावा॥
जेहि के घर बाहर बर होई। तेहि तेहि पत्र लिखै सब कोई॥
आलमशाह महा सुल्ताना। काहूका पत्र लिखै नहिंमाना॥
फिर गये देशपती सुल्ताना। काहू भेद न पायो जाना॥
फिर गये जहां देश के छाता। और को बान जानही बाता॥
फिर गये कोटिन देश के मीरा। फिर गये जहँ लग क्षत्र घनेरा॥
आलमशाह जो पुरुष अस पूछै मनहिं विचार।
को यहि जोग सुयोग महँ जाहि बियाहूं बार॥
यक दिन गई मांझ कैलासा। धन मुक्ता हर आई पासा॥
कहा समझाय सुनौ सुल्ताना। कोइ जगमहँ नहिं भेस समाना॥
पै बारी घर राखि न जाई। कठिन भार बारी गरुआई॥
बांध समुद्र उठीं नय तीरा। थांभ सकै को बाल शरीरा॥
हमरे अहै न बालक कोई। दिहों ब्याह जो आपन होई॥
कोऊ देश जे अहै सुल्ताना। भोला शाह बेस तुम जाना॥
तिनकह बहिन जो मोर बियाही। बालक अहै एक पुनि ताही॥
हय दिनौर नाम तेहि सम्पति महा सयान।
दीजै बारी ब्याहि तेहि जो मानै सुल्तान॥

धन कर वचन कीन मनमाना। आवै कोइ देवन में पाना॥
निकसी बात जगत लै धावा। भोलाशाह ते जाय जनावा॥
भयो हुलास सबै घर बारा। वेगि किया मंगनी कर चारा॥
बहु पहिराव चढ़ाव निशानी। बैठे मीर महा सो ज्ञानी॥
वस्त्र अमोल भार बहु साथा। पठये चीन पत्र दिये हाथा॥
आये सबै चीन के माहां। आलम शाह पाट पर जाहां॥
आय सबन सो शीश नवावा। दीन पत्र सो बांच सुनावा॥

देखा लोगन कोउ कै बांच पत्र सुख कीन।
आदर कीन अनेक विधि बिहँसि पान कर दीन॥

बीड़ा दीन हुलसि बैठावा। औ सब पंडित वेगि बोलावा॥
पूछा दिन सायत सब लीन्हा। तेहिदिन छापनिशानी कीन्हा॥
दीना दुल्हा केर पहिरावा। दीन द्रव्य जो वरणि न आवा॥
दीना पत्र सो फेर पठावा। दोउदिशि मन्दिरभयो बधावा॥
तीगुन दीन्हा बहुत चढ़ावा। तिलरी दीन्ह औ कंगनचढ़ावा॥
भा मंदिर मह मंगलचारा। कंवल सँवार पाट बैठारा॥
सखिन हुलसि सोहाग जो गावैं। कंवल सँवार चढ़ाव चढ़ावैं॥

सब अभरन भर आय के ओझा आप निशान।
कीनो मंगलचार सब गयो सो जगत बखान॥

भै परमान जो चढ़ी निशानी। बहु हुलास सब जगत बखानी॥
नखत सबै मिलि करैं हुलासा। चन्द्र भये पुनि गगन गरासा॥
रहै जो शशि ऊपर कैलासा। सखिन सबै सोहैं चहुँपासा॥
हाथो हाथ चरण सब लेहीं। भुमि पर पावँ धरै ना देहीं॥
निशिदिन संग रहै पुनि सोई। वही कर्म्म नहिं जानै कोई॥
कमल जो सोच करै मन माहां। अब हम पछाड़िपड़ब धौं काहां॥

अस नैहर कहो इन भर पावो। जाये बिहाये कहा फिर आवो॥

बीति गई आधी निशा सखी गई सब सोय।

जागपड़ी सोवत वहीं सुख सँवरे मन रोय॥

शब्द जो चौंकी निशिदिन रोई। उठ बैठी लागी मिल जोई॥

पूंछी कँवल काहे कुम्हिलाने। कससुखमानि सोवतअकुलाने॥

तुम घरमहँ सब जीव पिराना। कौनवियोग शोक तुममाना॥

सुनो शब्द पूछौं मन माहीं। आपन रहब देखौं सो नाहीं॥

आगे अन्त बिवाह जो होई। तो मोहिं राख सकैना कोई॥

छूटैं सब नैहर की बारी। छूटैं बाप माय महतारी॥

सोइ बिछोह सुमिरि मैं रोई। धौं ससुरारि गये कस होई॥

सुनत नाम ससुरारिको धड़कि उठा ममजीव।

सासनन्द धौं कस मिलै कैस मिलै धौं पीव॥

शब्द कहा सुनि बाल दुलारी। नैहर ते ससुरारि पियारी॥

पै जब प्रेम पीवरस होई। जन्म निबाहि लेय पुनि सोई॥

औ घर सास नन्द भौजाई। गुन औगुन सब लेहिं बनाई॥

तुमगुणवन्त सो कुल उजियारी। मैं दासी तो प्रेम भिखारी॥

कहो तो जाय देखि मैं आऊं। अरथ वहां के बरणि सुनाऊं॥

सुनि सो कँवल गहत विहँसानी। यहिविधिजाब पड़ैनहिंजानी॥

परो न कतहुं सखिन की बेटी। जो मोहिं निज कहैं सब हेटी॥

बिहँसि कहा तबतो शबद मोर पवन करलेख।

घर घर डोलौं रैन दिन कौन सकै मोहिंदेख॥

कबते भई परेवा भेसू। देखन चली कोऊ के देसू॥

कैसे उठी रैन जब ताहीं। भोरहोत पहुँची वह ठाहीं॥

देखत देश औ मीर पहारा। गई सो कोऊ नगर मँझारा॥

हाट बाट देखत निरताई। तब वह मांझ मंदिर के आई॥
देखिस गढ़ गढ़पति अररानी। चाल कुचाल देखि पछिनानी॥
आई जहां गढ़पति की बारा। बिरवा संग खेलै चौंसारा॥
रूप अलोन ज्ञान महँ हीना। गर्बभरा क्यों जाय न चीना॥

ताकर देखा बरण सब हाथ मींज पछिताय।
उठी नगरका छांड़ि सब चीनचली समुहाय॥

भइ अधरात मँदिर का आई। सोवत सखिन वहजागत पाई॥
पूंछा हुलसि कँवल उजियारी। कहौ शब्द सब भेद उघारी॥
और बात कुछ मोहिं न भावै। कहौ बात वर जौन कहावै॥
बोली शब्द कहांकी बाता। मौत पूत सब कीन बिधाता॥
भोले वे जन कीन बसीठा। जिनविपदीन मेलगरमीठा॥
भोले तोर बाप महतारी। भोले बुध जिन राम बिचारी॥
तुम शशिरूप चन्द्र उजियारी। तो करतार कहां लय डारी॥

देश दुवार बरनौ कहा काह पुरुष का नारि।
बरनौ काह कुमार वर फिर्यौ देखि करभारि॥

देश उजाड़ औ लोग गँवारा। चाल कुचाल भाव अँधियारा॥
पंथी पंथ चलत नहिं बांचा। करै न न्याव कोई पुनिसांचा॥
नगर सून जानौ बिन राजा। करता कठिन करै सब काजा॥
दूतन मिला रहै कोतवारा। दिन दुपहर लूटैं बटपारा॥
क्रोध दिवान मंत्र अभिमानी। लोभि भंडार दया बिनरानी॥
भोलाशाह भोग मन लोभा। करै न न्याव रहै नहिं शोभा॥
सुनै न कोऊ दुखीकी बाता। चहै तो यकदिन रहै न छाता॥

देखा ठाकुर नगर अस सेवक चंचल चोर।
देख भोर रोयों बहुत तब देखा वर तोर॥

देखि कोट औ नौ दो द्वारा। धर्म्म दया नहिं एकौ बारा॥
पुनि सो जाय लख्यों गढ़ मांझा। मांझदिवस जानौपुनिसांझा॥
तिरिया करें आप मुंह राई। देखि न सक्यों तक्यों फुलवाई॥
देखौं बैठि तोर भय ताहां। कहूं कहां रोयो मन माहां॥
नाम दिनौर क्रूर अभिमानी। सोहन वह लच्छन मुलतानी॥
रूप अलोन ज्ञान मह कांचा। करै काज नहिं एकौ सांचा॥
मात पिताकी बात न आनै। विश्वा संग कोटि रस जानै॥

लच्छण बारी बैस भै कौन ईश परताप।
तेहिघरजानै जन्मभर कौनसहै सन्ताप॥

सुनि यह बात सूख गइ बारी। चन्द्रवदन होगई अँधियारी॥
आये नीर उमड़ि भरि नैना। गातन सूख रहित भे बैना॥
अब शब्द मैं करहूं काहा। केहिविधि होई जन्म निबाहा॥
मात पितैं मोहिं दीन बहाई। हौं काकरौं मरों बिष खाई॥
दै बिष मोहिं तो अस्त्र कटारी। मरौं सो खायके हिरदै मारी॥
लागै आग दोऊ घर माहीं। जोमोहिंआश जियनकीनाहीं॥
अन्त सो पुनि मरना पै आहै। अभय मरौं कलंक नहिं चाहै॥

हौं सो बारी पिता घर बोलत वचन लजाउँ।
तब मैं बचौं कलंकते प्राण कांप मरजाउँ॥

शब्द कहा सुनि बात सयानी। तुमकस करो सुजीवन हानी॥
तुम बैठो अपने घर माहीं। अबहीं तोरि जानि कुछ नाहीं॥
मैं तो दासी हौं तेहि योगू। मरिहौं तोर प्राण संयोगू॥
सात द्वीप धन तोह असनाहीं। तैस मिलावौं जग उपराहीं॥
कहा कँवल यह बात अपारा। मात पिताका मेटनहारा॥
को सब नारि करै अस कोई। को दुख मोर संघाती होई॥

कहा शब्द मैं परी कि बारी। आयनोकरौं जाउँ जिवधारी॥

देखा कौतुक दई के कियाचहै कुछ कीन।
सोच न मानो मनहिं तुम रहो दई लौलीन॥

तब धन बिहँसि दीन करपाना। हाथ तुम्हार दियों मैं प्राना॥
भावै बेगि सों आन जलावहु। भावै यहितन छार मिलावहु॥
देखो मिलै कंत जेहि देशा। प्रथमहि आन कियो संदेशा॥
तब पुनि शब्द जौन के पाऊं। तिन लैजाउँ प्रान यहि ठाऊं॥
भई जो तबै परेवा भेसू। चली सो पीव हरन सब देसू॥
प्रथमै महा द्वीपका धाई। देखिस सबै द्वीप निरथाई॥
कनक द्वीपका कीन पयाना। देखिस वीर सबै अस्थाना॥

देखि द्वीप कम अस्थले मनुष वीर तेहि माथ।
धाई दिया द्वीपका पड़ी अगम औ गाथ॥

देखिस दया रूप उजियारा। तेहूं न पायसि प्रेम पियारा॥
सगर अहीरस लंग समीपा। गई नांघ वह सिंहलद्वीपा॥
सब उजार नहिं वह बन कोई। मिला न अन्त हार तब रोई॥
जम्बूद्वीप पयानह कीन्हा। चलि वहद्वीप आयपगदीन्हा॥
सिंहल से पुनि कीन्ही फेरा। आय सरान्द्वीप सब हेरा॥
प्रथमै देश दखिन सब हेरा। आय बँगाले कीन्ह बसेरा॥
जवनपूर देहली अस्थाना। हेरिस काबुल औमुल्ताना॥

ठट्ठा भखर कंजनी और ईरान अस्थान।
देखिफिरीपुनिचहुंदिशाआइबलखनियरान॥

आई बलखराय वह जाना। रूमशहर का कीन्ह पयाना॥
रूमशहर नेरे भय जाई। बैठ वृक्षतर लग सहताई॥
ततखन पांखन हंस उड़ाई। सबै परे वा बन महँ आई॥

सब मिलि चरण भोर हरषाई। शब्दसुभाय मिली तिनआई॥
सब पांखिन आदर कै लीन्हा। आपनिजाति जातिकेचीन्हा॥
पूंछा पखिन कहां कहँ खेली। कसबनमहँतोयफिरसिअकेली॥
का तो नावँ रहेसि केहि गाऊं। कौने काज फिरेसि सब ठाऊं॥
कहेसिके नानौ शब्द मम भयों कुबुद्धि सेवाय।
छाड्यों देश सुदेश वह रह्यों कुदेश भुलाय॥
जेहि हेर्यों तेहि कतहुं न पायों। जन्म अकारथ खोय गँवायों॥
फिरौं उदास जगत के माहां। मीत न कोई जावँ केहिपाहां॥
जन्म सेरान न पूजी आसा। फिरौं उदास जाउं केहिपासा॥
पंखी कहा जगत कर लेखा। जन्म पाय तन दुख सुखलेखा॥
दुख सुख संघ सबै यह देहा। छोटे पंथ होय जब घेहा॥
अबक्षण चलो सो अस्थलमाहां। सेवा करन मीत कह ताहां॥
जो फिर शब्द सुना यह बाता। तोसँग चली भयो मन राता॥
मिला साथ पंखिन के सब मिलि कीन उठान।
छांड़ि चराई बीच बन गई जहां अस्थान॥
पहुंची जाय मँदिर नियराना। ऊपर तेहि पंखी अस्थाना॥
लागीं करन शब्द की सेवा। बैठे चहुंदिशि पांख परेवा॥
ततखन आय हंस लै चारा। जानौ उदय भानु उजियारा॥
पै मन सोच उदासी रंगा। तैं आयसि मन दीप पतंगा॥
देखा शब्द रूप तेहि केरा। गा दुख भूज दरश जब हेरा॥
भूलगयो दुख जिनलौ झेला। पायसि जगकर मोलअकेला॥
दुख और पाप दीन्ह मैं भागा। गा भव छूट नेह जब लागा॥
भा चकचोहट मनहिं मा केहि विधि भेंटौं हाथ।
जो यहि प्रेम बढ़ावहूं लै उभर्यों पुनि साथ॥